# इकाई–4 द्वितीयक आँकड़ों का विश्लेषण, अन्तर्वस्तु विश्लेषण, प्रतिवेदन लेखन व सामाजिक अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता की समस्या

इकाई की रूपरेखा :


4.0 परिचय

4.1 अधिगमन उद्देश्य

4.2 संरचना

4.3 द्वितीयक आँकड़ों का विश्लेषण

- 4.3.1 द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण का अर्थ व परिभाषा
- 4.3.2 प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों में अंतर
- 4.3.3 द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण की प्रक्रिया
- 4.3.4 द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण के गुण या लाभ
- 4.3.5 द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण के दोष या सीमाएँ
- 4.3.6 अपनी प्रगति जांचिए
- 4.3.7 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर

4.4 अन्तर्वस्तु विश्लेषण

- 4.4.1. अन्तर्वस्तु विश्लेषण का अर्थ एवं परिभाषा
- 4.4.2. अन्तर्वस्तु विश्लेषण की विशेषताएँ
- 4.4.3. अन्तर्वस्तु विश्लेषण का महत्त्व
- 4.4.4. अन्तर्वस्तु विश्लेषण की प्रमुख समस्याएँ
- 4.4.5. अपनी प्रगति जांचिए
- 4.4.6. अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर

4.5 प्रतिवेदन लेखन

- 4.5.1. रिपोर्ट तैयार करने का उद्देश्य
- 4.5.2. अनुसंधान–प्रतिवेदन तैयार करने से संबंधित कुछ सामान्य सिद्धान्त
- 4.5.3. एक अच्छी रिपोर्ट की विशेषताएँ
- 4.5.4. प्रतिवेदन की रूपरेखा
- 4.5.5. अनुसंधान–प्रतिवेदन की प्रमुख कसौटियाँ

4.5.6. अनुसंधान–प्रतिवेदन का प्रकाशन
4.5.7. अपनी प्रगति जांचिए
4.5.8. अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर
4.6 सामाजिक अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता
4.6.1 वस्तुनिष्ठता का अर्थ तथा परिभाषा
4.6.2 सामाजिक अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता का महत्त्व
4.6.3 वस्तुनिष्ठता को प्राप्त करने में कठिनाइयाँ
4.6.4 वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने के साधन
4.6.5. अपनी प्रगति जांचिए
4.6.6. अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर
4.7 सारांश
4.8 मुख्य शब्दावली
4.9 अभ्यास हेतु प्रश्न
4.10 आप ये भी पढ़ सकते हैं

## 4.0. परिचय :

इस इकाई में द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण, अन्तर्वस्तु विश्लेषण, प्रतिवेदन लेखन व सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता की समस्या पर विस्तृत चर्चा करेंगे। सामाजिक अनुसंधान में आँकड़ों के संकलन के पश्चात् उनका विश्लेषण किया जाता है। संकलित तथ्यों से सही परिणामों को निकालने के लिए तथ्यों को व्यवस्थित करके सरल, सुव्यवस्थित एवं जनसाधारण के समझने योग्य बनाने की प्रक्रिया को आँकड़ों का विश्लेषण कहा जाता है। द्वितीयक आँकड़ों का विश्लेषण आसानी से किया जा सकता है क्योंकि ये आँकड़े पूर्व में सुव्यवस्थित एवं स्पष्ट होते हैं। द्वितीयक शोध तथा आँकड़ा विश्लेषण अधिक सावधानी व परिश्रम से किया जाए तो यह मितव्ययी रूप से बड़ी से बड़ी शोध समस्याओं को हल कर सकता है। शोधकर्त्ता को सदैव इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि संबंधित विषय से जुड़ा विश्लेषण आसान व सुस्पष्ट हो ताकि उसका आम आदमी लाभ उठा सके। सामाजिक शोध अभिकल्प में अंतर्वस्तु विश्लेषण महत्वपूर्ण भूमिका अभिनीत करता है। अंतर्वस्तु विश्लेषण का संबंध भाषागत अभिव्यक्तियों तथा संचार के अन्य साधनों द्वारा प्राप्त तथ्यों की अंतर्वस्तु से होता है। इसमें तथ्यों का प्रक्रियाकरण, विश्लेषण व विवेचन करने के पश्चात् शोध निष्कर्ष दिए जाते हैं। इन्हीं निष्कर्षों को सामान्यीकरण करने के उद्देश्य से इनका वैज्ञानिकीकरण किया जाता है। यह कार्य शोध प्रतिवेदन लेखन कहलाता है। यह शोधकर्त्ता का अंतिम चरण होता है। प्रतिवेदन लेखन के द्वारा शोध कार्य दूसरों तक पहुंचाया जाता है। सामाजिक विज्ञान के शोध में वस्तुनिष्ठता प्राप्त करना एक कठिन कार्य है क्योंकि सामाजिक विज्ञान की घटनाएं अमूर्त, जटिल, परिवर्तनशील, गुणात्मक तथा विभिन्नतायुक्त होती हैं। जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में ऐसी व्यावहारिक कठिनाइयाँ आ जाती हैं जो अध्ययन में वस्तुनिष्ठता की प्राप्ति के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती हैं।

## 4.1 अधिगमन उद्देश्य :

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप निम्नलिखित उद्देश्यों को अच्छी प्रकार समझ सकेंगे

- द्वितीयक आँकड़ों का विश्लेषण
- अन्तर्वस्तु विश्लेषण

– प्रतिवेदन लेखन

– सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता की समस्या को जान पाएंगे।

## 4.2 संरचना :

संरचना किसी भी विषयवस्तु को व्यवस्थित व क्रमबद्ध स्वरूप प्रदान करना है। संरचित विषय–वस्तु सरल व सुबोधगम्य होती है। उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रस्तुत इकाई का संरचनात्मक ढ़ाँचा इस प्रकार है।

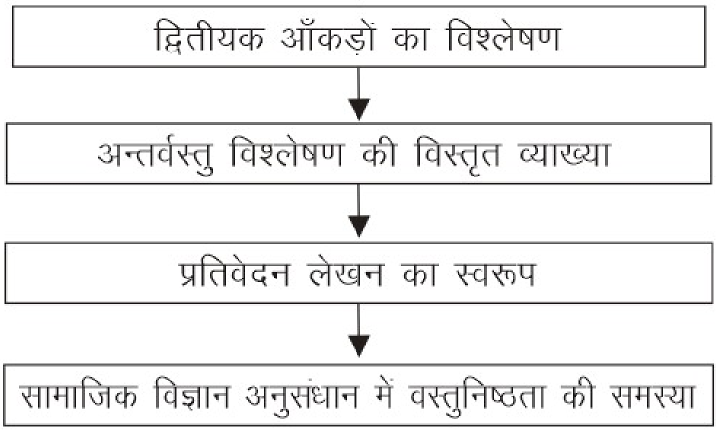


## 4.3. द्वितीयक आँकड़ों का विश्लेषण

सामाजिक अनुसंधान में अनुसंधान अभिकल्प के निर्माण के पश्चात् आँकड़ों का संकलन किया जाता है। अनुसंधानकर्त्ता विभिन्न स्रोतों से बहुत मात्रा में आँकड़ों का संग्रह व संकलन करता है, लेकिन व्यावहारिक रूप में पहले से मौजूद आँकड़ों का प्रयोग अनुसंधान में अधिक प्रचलित है। द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण से अभिप्राय उन आँकड़ों के विश्लेषण से है जो किसी और ने किसी दूसरे प्राथमिक उद्देश्य के लिए किया है। इन पहले से एकत्रित आँकड़ों का अनुसंधानकर्त्ता के द्वारा अपने शोध कार्य में प्रयोग अनुसंधानकर्त्ता के समय व साधनों दोनों की बचत में सहायक है। यह विश्लेषण मौजूदा तथ्यों का पुनः विश्लेषण होता है द्वितीयक आँकड़ें प्राथमिक शोध की प्रारूप रचना में सहायक होने के साथ–साथ प्राथमिक आँकड़ों के संग्रह से प्राप्त परिणामों की तुलना में भी सहायक होते हैं। अतः किसी भी शोधकार्य की शुरूआत करने से पूर्व द्वितीयक आँकड़ों का विश्लेषण करना हितकर होता है।

### 4.3.1 द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण का अर्थ व परिभाषा :

शोधकर्त्ता शोध की शुरूआत करने से पूर्व ही यह जान ले कि वह प्रस्तुत विषय के बारे में कितनी जानकारी रखता है और विषय के संबंध में द्वितीयक स्रोतों से जानकारी प्राप्त कर ले और यह जान ले कि प्रस्तुत विषय वस्तु को किसी शोधकर्त्ता, संस्था या सरकारी या गैर सरकारी संस्था ने अपने प्राथमिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयोग किया है। द्वितीयक आँकड़ों का विश्लेषण एक लचीली विधि है जो विभिन्न तरीकों से प्रयोग में लाई जा सकती है। यह एक पहले से प्रयुक्त अनुसंधान तकनीक है जो अनुसंधानकर्त्ता को आसानी से विषयवस्तु से संबंधित आँकड़ों को प्रदान करती है। यह एक व्यवस्थित अनुसंधान तरीका है जो प्राथमिक आँकड़ों के संग्रह से प्राप्त पणिामों की तुलना में भी सहायक होता है।

द्वितीयक आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए यह जानना आवश्यक है कि प्राथमिक व द्वितीयक आँकड़ों में अंतर क्या है। इनके प्राप्ति के स्रोतों में क्या अंतर है।

### 4.3.2 प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों में अंतर :

1. प्राथमिक आँकड़ों के संकलन में अधिक धन, समय और श्रम की जरूरत होती है जबकि द्वितीयक आँकड़ों का संकलन तुलनात्मक रूप से कम खर्चीला होता है।
2. प्राथमिक आँकड़ों का संकलन शोधकर्त्ता के द्वारा प्रथम बार किया जाता है जबकि द्वितीयक आँकड़ों अथवा तथ्यों का संकलन एवं प्रकाशन पूर्व में कर लिया जाता है तथा शोधकर्त्ता इन्हें द्वितीय बार प्रयोग करता है।
3. प्राथमिक आँकड़े मौलिक होते हैं जबकि द्वितीयक आँकड़े मौलिक नहीं होते।
4. प्राथमिक आँकड़े अप्रकाशित होते हैं जबकि द्वितीयक आँकड़े प्रकाशित होते हैं।
5. प्राथमिक आँकड़े विश्वसनीय होते हैं। जबकि द्वितीयक आँकड़े पूर्ण अविश्वसनीय नहीं होते हैं।
6. प्राथमिक आँकड़ों में सत्यापन का गुण अधिक होता है जबकि द्वितीयक आँकड़े जिस रूप में हैं उनका उसी रूप में प्रयोग करना होता है।
7. प्राथमिक आँकड़े एक कच्चे माल की तरह हैं जिनके आधार पर अध्ययन को एक स्वरूप दिया जाता है जबकि द्वितीयक आँकड़े एक तैयार माल की तरह हैं, जिनका उपयोग तो किया जाता है लेकिन आवश्यकतानुसार उनमें परिवर्तन नहीं किया जा सकता है।

8. प्राथमिक आँकड़ों का संकलन करने के लिए अनेक अध्ययन प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है जबकि द्वितीयक आँकड़ों का प्राथमिक आँकड़ों की अध्ययन प्रविधियों द्वारा संकलन नहीं किया जा सकता है।

9. प्राथमिक आँकड़ों और द्वितीयक आँकड़ों में एक अन्य अंतर समय कारक से संबंधित होता है अर्थात् कोई विशेष तथ्य एक वक्त में एक व्यक्ति के लिए प्राथमिक हो सकता है। कुछ समय पश्चात् वही तथ्य दूसरे अध्ययनकर्त्ता के लिए प्राथमिक आँकड़े द्वितीय आँकड़े बन सकते हैं।

10. प्राथमिक आँकड़ों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची एवं प्रश्नावली द्वारा किया जाता है। जबकि द्वितीयक आँकड़ों का संकलन लिखित प्रलेखों के अंतर्गत विश्लेषण करके किया जाता है।

11. प्राथमिक सामग्री का संकलन शोधकर्त्ता द्वारा समस्या आश्रित पहलुओं को सम्मुख रखकर किया जाता है जबकि द्वितीयक सामग्री के लिए हमें प्रलेखों पर आश्रित रहना पड़ता है।

### 4.3.3 द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण की प्रक्रिया :

अनुसंधान कार्य में शोध क्षेत्र व शोध से संबंधित प्रश्न ही यह निर्धारित करते हैं कि अनुसंधानकर्त्ता किन तरीकों का अनुसरण करेगा। अनुसंधान तरीके में निम्न बातें निहित होती हैं– आँकड़ों का संकलन, आँकड़ों का विश्लेषण व आँकड़ों का प्रतिपादन। द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण के अंतर्गत अनुसंधानकर्त्ता अनुसंधान प्रक्रिया में निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करता है।

**1. अनुसंधान प्रश्नावली का निर्माण** : द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण की प्रमुखता इस चीज में निहित है कि सैद्धांतिक ज्ञान का प्रयोग इस तरह से हो कि पूर्व में विद्यमान आँकड़ों का अनुसंधान प्रश्नावली में सही से प्रयोग हो। इसी कारण से विश्लेषण प्रक्रिया का प्रथम चरण प्रश्नावली निर्माण होता है। इसके निर्माण के अंतर्गत इस बात का अध्ययन अहम होता है कि प्रश्नावली के निर्माण के अंतर्गत कौन सी बाधाएँ व सहायक पहलू हैं।

**2. आँकड़ों के समूह की पहचान** : ज्यादातर अनुसंधान कार्य इस बात के साथ शुरू होते हैं कि क्या पहले से ज्ञात पहलू हैं और विषय के किन पहलुओं के संबंध में जानकारी एकत्रित करनी है। आँकड़े जो पहले से विद्‌यमान होते हैं, वे अनुसंधान प्रश्नों के संबोधन में सहायक होते हैं। अनुसंधानकर्त्ता को आँकड़ों के समूह के निर्माण में आसानी होती है,

क्योंकि उसे पहले से विद्यमान आँकड़ों से संबंधित पहलुओं का ज्ञान होता है। आँकड़ों के संकलन की तकनीक में सर्वेक्षण विधि के प्रयोग की आवश्यकता नहीं होती है।

**3. आँकड़ों के समूहों का मूल्यांकन** : एक बार जब आँकड़ों के समूह का निर्माण हो जाता है तो आवश्यकता उन आँकड़ों के समूह के मूल्यांकन की होती है। इससे एक फायदा होता है अगर आँकड़े पहले से किसी समूह में विद्यमान होते हैं तो उनकी पुनरावृत्ति संभव नहीं होती है। आँकड़ों के समूह के मूल्यांकन के दौरान निम्न चरणों का पालन किया जाता है–

(1) अध्ययन का उद्देश्य क्या है।

(2) सूचनाओं के संग्रह के लिए कौन जिम्मेदार है।

(3) वास्तव में कौन सी सूचना एकत्रित की गई है।

(4) सूचना कब एकत्रित की गई।

(5) आँकड़ों की प्राप्ति के समय कौन सी विधियाँ प्रयुक्त की गई हैं।

(6) प्राथमिक आँकड़ों का प्रबंधन।

(7) एक स्रोत से प्राप्त सूचना व दूसरे स्रोत से प्राप्त सूचना में कितनी सामंजस्यता है।

**4.3.4 द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण के गुण या लाभ :**

1. द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण, प्राथमिक आँकड़ों के विश्लेषण तथा संग्रहण की तुलना मे अपेक्षाकृत आसान हैं।

2. शोधकर्त्ता द्वितीयक आँकड़ों के संकलन तथा विश्लेषण से अपने समय धन तथा श्रम को बचा सकते हैं।

3. द्वितीयक आँकड़े प्राथमिक आँकड़ों की तुलना में कम खर्चीले होते हैं।

4. समय के साथ द्वितीयक आँकड़ों मे परिवर्तन आसान होता है क्योंकि हमारे प्राथमिक आँकड़े पहले से ही उपस्थित होते हैं।

5. द्वितीयक आँकड़े प्राथमिक आँकड़ों के संग्रह में पूरक के रूप में कार्य करते हैं।

6. द्वितीयक आँकड़ों के संग्रह के लिए विशेष ज्ञान व प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है।

**4.3.5 द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण के दोष या सीमाएँ :**

1. यद्यपि द्वितीयक आँकड़े से किसी समूह की स्थिति के बारे में जानकारी मिलती है लेकिन प्राथमिक आँकड़ों की तुलना में यह जानकारी अधूरी होती है।

2. बिना समुचित व्याख्या और विश्लेषण के इनका प्रयोग सही निष्कर्ष नहीं दे सकता है।

3 द्वितीयक आँकड़ों की व्याख्या अनुसंधानकर्त्ता की स्वयं की अभिवृत्तियों से भी प्रभावित होती है।

4 द्वितीयक आँकड़ों की गुणवत्ता निर्धारित करना एक कठिन कार्य होता है।

5. द्वितीयक आँकड़े मुख्य शोधकर्त्ता के उद्देश्यों के अनुसार संग्रहित नहीं किए गए होते हैं। इसलिए यह मुख्य शोधकर्त्ता के उद्देश्यों को पूरा करने में कभी–कभी असमर्थ होते हैं।

6. अधिकांश द्वितीयक आँकड़े अप्रत्यक्ष रूप से संकलित किए जाते हैं इसलिए किसी भी क्षेत्र या समूह की जानकारी उचित एवं स्पष्ट रूप से नहीं मिल पाती है।

7. द्वितीयक आँकड़ों से व्यक्तिगत या सामूहिक मूल्य, विश्वास या समाज में होने वाले समसामयिक बदलावों के कारणों को जान पाना अपेक्षाकृत कठिन कार्य है।

8. द्वितीयक आँकड़ों के स्रोतों में आपस में विरोधाभास हो सकता है।

**4.3.6 अपनी प्रगति जांचिए :**

(क) द्वितीयक आँकड़ों से क्या अभिप्राय है?

(ख) द्वितीयक आँकड़ों के स्रोत बताओ।

(ग) द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण की प्रक्रिया से क्या अभिप्राय है?

(घ) द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण की प्रक्रिया के कितने चरण हैं?

(ड़) द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण की प्रक्रिया के कोई दो गुण बताओ।

**4.3.7 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर :**

(क) द्वितीयक तथ्य वे सूचनाएं व आँकड़े हैं जो अनुसंधानकर्त्ता को प्रकाशित व अप्रकाशित प्रलेखों, रिपोर्ट व पत्र–डायरी आदि से प्राप्त होते हैं।

(ख) द्वितीयक आँकड़ों के स्रोतों विभिन्न व्यक्तिगत प्रलेख जैसे जीवन इतिहास, डायरी, पत्र, संस्मरण व सार्वजनिक प्रलेख जैसे – रिकार्ड, प्रकाशित आँकड़े, पत्र–पत्रिकाओं की रिपोर्ट आदि हैं।

(ग) द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण का सामान्य अर्थ मौजूदा तथ्यों का पुनः विश्लेषण होता है। यह उन आँकड़ों व सूचनाओं का विश्लेषण है जिन्हें शोधकर्त्ता, संस्था या गैर सरकारी संगठन ने अपने निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पहले प्रयोग किया हो।

(घ) द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण की प्रक्रिया के तीन चरण हैं :

- प्रश्नावली का निर्माण
- आँकड़ों के समूह का निर्माण
- आँकड़ों के समूह का मूल्यांकन

(ङ) द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण की प्रक्रिया के गुण :

– प्राथमिक आँकड़ों के संग्रहण व विश्लेषण की तुलना में अपेक्षाकृत आसान हैं।

– द्वितीयक आँकड़े प्राथमिक आँकड़ों के संग्रह में पूरक का कार्य करते हैं।

## 4.4 अन्तर्वस्तु विश्लेषण

अन्वर्वस्तु विश्लेषण प्रविधि का विकास सामाजिक अनुसंधानों में पत्रकारों की प्रेरणा से हुआ। सर्वप्रथम पत्रकारों ने समाचार–पत्रों के माध्यम से अंतर्वस्तु विश्लेषण की परंपरा का प्रारंभ किया। समाचार–पत्रों के विश्लेषण से महत्वपूर्ण निष्कर्ष भी निकाले गए थे। इन्हीं विश्लेषणों से प्रेरित होकर सामाजिक अनुसंधान शोधकर्त्ताओं ने अंतर्वस्तु विश्लेषण को एक प्रविधि के रूप में विकसित किया। एक अध्ययनकर्त्ता जब प्राथमिक तथा द्वितीयक श्रोतों से संकलित किए गए गुणात्मक तथ्यों को व्यवस्थित करने के लिए उन्हें उपयुक्त श्रेणियों में वर्गीकृत करता है तब श्रेणियों में वर्गीकृत करने की इस प्रक्रिया को अंतर्वस्तु विश्लेषण के नाम से जाना जाता है। अंतर्वस्तु विश्लेषण को एक प्रक्रिया के रूप में भी देखा जाता है। अध्ययन विषय संबंधित गुणात्मक या परिमाणात्मक तथ्यों के अंतर्वस्तु को निश्चित श्रेणियों में वितरित करने की प्रक्रिया को अंतर्वस्तु विश्लेषण कहा जाता है इस प्रविधि का विकास सन् 1926 में माना जाता है। इस प्रविधि के द्वारा सामाजिक शोधकर्त्ता प्रकाशित या अप्रकाशित लेखों या पुस्तकों या अन्य संचार के साधनों का विश्लेषण कर एक वर्गीकृत संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत कर सकता है। आरंभ में इस पद्धति का प्रयोग समाचार–पत्रों से संबंधित विभिन्न प्रकार की सामग्री को वर्गीकृत करने के लिए किया जाता था। इसके पश्चात कुछ साहित्यकारों ने साहित्य के क्षेत्र में तथा राजनीति शास्त्रियों ने भी जनमत

संबंधी अध्ययनों के लिए इस पद्धति का उपयोग किया। आज अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों में इस पद्धति का उपयोग किया जाने लगा है।

### 4.4.1 अंतर्वस्तु विश्लेषण का अर्थ एवं परिभाषा :

अंतर्वस्तु विश्लेषण का संबंध भाषागत अभिव्यक्तियों तथा संचार के अन्य साधनों द्वारा प्राप्त तथ्यों के अंतर्वस्तु से होता है। समाचार पत्रों, उपन्यासों, भाषणों या संचार के अन्य माध्यमों में व्यक्त तथ्यों का मात्रात्मक विश्लेषण किसी भी प्रशिक्षित शोधकर्त्ता द्वारा किया जा सकता है। अतः अंतर्वस्तु विश्लेषण सामाजिक शोध की ऐसी प्रविधि है जिसके द्वारा विभिन्न स्रोतों से प्राप्त गुणात्मक सामग्री को इस प्रकार श्रेणीबद्ध किया जाता है कि उसमें परिमाणात्मक निष्कर्ष प्रस्तुत किए जा सकें। इस प्रविधि से वस्तुनिष्ठ, क्रमबद्ध तथा परिमाणात्मक वर्णन प्रस्तुत किया जा सकता है। विभिन्न समाजशास्त्रियों ने अंतर्वस्तु विश्लेषण को निम्न प्रकार परिभाषित किया है।

गुडे एवं हॉट के अनुसार, "जब संचार के विभिन्न साधनों, जैसे – पत्रिकाओं, समाचार–पत्रों, रेडियो, कार्यक्रमों अथवा इसी प्रकार की अन्य सामग्रियों के लिए एक गुणात्मक संकेतन का प्रयोग किया जाता है, तब इसी संकेतन को हम अंतर्वस्तु–विश्लेषण कहते हैं।''

पॉलिन यंग के अनुसार, ''अन्तर्वस्तु विश्लेषण का सम्बन्ध भाषागत अभिव्यक्तियों द्वारा अनुसंधान तथ्यों के अन्तर्वस्तु से होता है।''

कटर्लिंगर के अनुसार, ''वस्तु विश्लेषणों को मापने के लिए संचारों के व्यवस्थित, वस्तुनिष्ठ और मात्रात्मक ढंग से अध्ययन और विश्लेषण करने की पद्धति है।

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि अंतर्वस्तु सामाजिक शोध की प्रविधि है, जिसमें संचार अथवा भाषागत अभिव्यक्तियों से प्राप्त तथ्यों का अंतर्वस्तु विश्लेषण किया जाता है। इस विधि का मुख्य कार्य गुणात्मक तथ्यों को श्रेणियों में व्यवस्थित करके उन्हें मात्रात्मक अथवा परिणात्मक रूप में प्रस्तुत करना होता है। इसके द्वारा प्राप्त निष्कर्षों से सत्यता की परीक्षा और पुनर्परीक्षण किया जा सकता है। गुडे एवं हॉट ने अपनी पुस्तक 'मैथड्स इन सोशियल रिसर्च' में अंतर्वस्तु विश्लेषण के बारे में कहा है कि समाचार–पत्रों के विश्लेषण एवं तर्कपूर्ण संरचना के लिए एवं अच्छे तथा विश्वसनीय निष्कर्षों के लिए वैज्ञानिक पद्धति का होना आवश्यक है और वह अंतर्वस्तु विश्लेषण है।

4.4.2 अंतर्वस्तु विश्लेषण की विशेषताएं :

**1. संचार सामग्री में प्रवृत्तियों का वर्णन करना** : अंतर्वस्तु विश्लेषण में अध्ययन की विषय–वस्तु की प्रकृति एवं परिवर्तनों को लिखा जाता है। आजकल के शोध अध्ययन विषय वस्तु की श्रेणियों का ही अध्ययन करते हैं यद्यपि इनकी अतिरिक्त श्रेणियां अध्ययन को और अधिक मूल्यवान बना सकती हैं। इसके अलावा एक ही व्यवस्था को लगातार काफी समय तक प्रयोग किया जाए तो कुछ नये तथ्य सामने आ सकते हैं।

**2 संचार से अंतर्राष्ट्रीय भिन्नताओं को प्रकट करते हैं** : अंतर्वस्तु विश्लेषण द्वारा संचार में व्याप्त अंतर्राष्ट्रीय भिन्नताओं को प्रकट किया जा सकता है। एक ही समस्या, जैसे युद्ध अथवा अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भिन्न–भिन्न अर्थों में व्याख्या की जा सकती है।

**3. संचार के माध्यमों अथवा स्तरों की तुलना करना** : संचार के भिन्न–भिन्न माध्यम, जैसे (समाचार–पत्र, पत्रिकाएं, रेडियो, टेलिविजन, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि) एवं भिन्न–भिन्न स्तर न केवल जनसमूहों को आकर्षित करते हैं। बल्कि वे समान विषयों को भिन्न भिन्न अर्थों में व्यक्त करते हैं।

**4. संचार के स्तरों का निर्माण एवं लागू करना** : अंतर्वस्तु विश्लेषण द्वारा संचार स्तर का वर्णन किया जा सकता है। संचार स्तर के मूल्यांकन में संचार स्तरों की स्वीकृति तथा सामग्री विश्लेषण द्वारा संचार की विषय–वस्तु की तुलना की जाती है।

**5. विद्वता के विकास को खोजना** : अन्तर्वस्तु विश्लेषण का प्रयोग सामाजिक विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों तथा साहित्य के विभिन्न रूपों में किया जाता है। यह अध्ययनकर्त्ता के लिए क्षेत्रों की रचना एवं विकास के वर्णन के लिए एक लाभदायक साधन बन सकता है।

**6. उद्देश्य के विपरीत संचार वस्तु का आडिट करना** : प्रत्येक संचार माध्यम का एक स्पष्ट अथवा अस्पष्ट उद्देश्य अथवा उद्देश्यों का पुंज होता है। वस्तु के गुणों की माप उद्देश्यों का सम्मानजनक वर्णन करती है। अतः अंतर्वस्तु विश्लेषण का प्रयोग संचारकर्त्ता के उद्देश्यों एवं सिद्धांतों के अंतर्गत संचार वस्तु में गलत वर्णन एवं गलतियों को सुधारने के लिए किया जा सकता है।

**7. गुणात्मक तथ्यों को मात्रात्मक रूप प्रदान करना** : सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत गुणात्मक तथ्य प्राप्त होते हैं, जिनका विश्लेषण प्राय संभव नहीं होता। ऐसी स्थिति में

अंतर्वस्तु विश्लेषण के द्वारा ही गुणात्मक तथ्यों को मात्रात्मक रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है।

**8. विषय से संबद्ध तथ्यों का संकलन** : अंतर्वस्तु विश्लेषण की प्राथमिक आवश्यकता अध्ययन विषय से संबंधित आवश्यक तथ्यों का सावधानीपूर्वक चुनाव होता है। जिन तथ्यों को हम विश्लेषण के लिए चुनते हैं और उनकी सूची तैयार करनी होती है. उदाहरण के लिए यदि हमें समाचार–पत्रों में प्रकाशित कुछ विशेष समाचारों अथवा किसी उपन्यासकार द्वारा रचित उनके उपन्यासों का अंतर्वस्तु विश्लेषण करना है तो सर्वप्रथम हमें विभिन्न श्रेणियों के प्रासंगिक समाचारों अथवा उस उपन्यासकार के उपन्यासों की संपूर्ण सूची तैयार करनी होगी। निदर्शन पद्धति के द्वारा हम उनमें से निर्धारित संख्या में तथ्यों का चुनाव कर सकते हैं परंतु ऐसा तभी करना आवश्यक होता है जब समाचार–पत्रों की संख्या अथवा उपन्यासों की संख्या अधिक हो।

**9. अध्ययन अथवा विश्लेषण की इकाइयों का चयन** : अंतर्वस्तु विश्लेषण के इस चरण में अध्ययन विषय से संबंधित इकाइयों का निर्धारण और चयन किया जाता है। विश्लेषण से संबंधित ये इकाइयां अनेक प्रकार की हो सकती हैं। जो अग्रलिखित हैं :

**(i) शब्द** – अंतर्वस्तु विश्लेषण में 'शब्द' सबसे छोटी इकाई के रूप में प्रयुक्त होता है। ये शब्द संकेत अथवा इकाई संकेत के रूप में भी जाने जाते हैं। शब्दों के संगठन के आधार पर ही किसी विचारधारा के महत्व का विश्लेषण किया जाता है। एक लेख में प्रयुक्त शब्दों को अलग–अलग गिना जा सकता है और उसके आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है कि कौन–सी विचारधारा कितनी महत्वपूर्ण है, उसका क्या औचित्य है? और भविष्य में उसका क्या महत्व रहेगा? उदाहरण के लिए चुनाव भाषणों का विश्लेषण शब्दों के आधार पर ही किया जाता है। इसके अलावा पत्र–पत्रिकाओं में किस अंश को महत्व दिया जाता है इसका अध्ययन विश्लेषण भी शब्दों को इकाई मानकर किया जाता है।

**(ii) प्रसंग**–अंतर्वस्तु विश्लेषण की दूसरी बड़ी इकाई प्रसंग है। इसे वाक्य अथवा अनुच्छेद भी कहा जाता है। इसके अंतर्गत विस्तृत विवरण संभव है। प्रसंग सबसे महत्वपूर्ण इकाई है, इसके प्रयोग से किसी व्यक्ति के भाषण अथवा वार्तालाप के महत्व को बताया जा सकता है। सामग्री विश्लेषण की इकाई के रूप में वाक्य अथवा अनुच्छेद का पत्रकारिता के क्षेत्र में विशेष महत्व है। वाक्य तथा अनुच्छेद प्रमुख और गौण दो प्रकार के होते हैं।

(1) प्रमुख वाक्य–सामान्यतः समाचार–पत्रों के मुख्य पृष्ठ पर अथवा मुख्य समाचारों के आरंभ में प्रसारित किया जाता है।

(2) गौण वाक्य –ये सामान्य महत्व के वाक्य होते हैं। अतः सभी प्रमुख एवं गौण वाक्यों को विश्लेषण की इकाई मानकर अंतर्वस्तु विश्लेषण किया जा सकता है।

**(iii) पात्र**–अंतर्वस्तु विश्लेषण की इकाई के रूप में किसी नाटक, उपन्यास, कहानी, चलचित्र अथवा दूरदर्शन के किसी पात्र का चयन किया जाता है। उदाहरण के लिए शेक्सपीयर के नाटकों से पोर्शिया जैसे चर्चित पात्र के चरित्र को लेकर सरलतापूर्वक विश्लेषण किया जा सकता है।

**(iv) मद** – मद अथवा आइटम या विषय अंतर्वस्तु विश्लेषण की एक महत्वपूर्ण इकाई है। यह मद कोई किताब, मैग्जीन का लेख अथवा कहानी, भाषण, रेडियो प्रोग्राम, एक पत्र, पत्रिका, समाचार अथवा प्रचार का साधन, एक संपादकीय अथवा कोर्ट का स्वयं प्रस्तुत वर्णन हो सकता है। इन मदों का विश्लेषण करके किसी देश अथवा क्षेत्र में संचार के साधनों का विकास एवं समृद्धता ज्ञात की जा सकती है, जैसे अन्य समाचार एजेंसियों की तुलना में बी.बी.सी. लंदन की लोकप्रियता का होना इस बात का प्रमाण है कि उसके पास समाचार की मदें अथवा आईटम अधिक हैं तथा विश्वसनीय हैं।

**(v) स्थान व समय का भाव**–संचार के क्षेत्र में स्थान व समय का माप अंतर्वस्तु विश्लेषण की एक महत्वपूर्ण इकाई है। स्थान से तात्पर्य किसी समाचार–पत्र, पत्रिका अथवा लिखित साहित्य में किसी व्यक्ति विशेष के विचारों को मिलाने वाले स्थान से है। उदाहरण के लिए भारत के प्रधानमंत्री का विदेश दौरा भारत के विदेश संबंधों को किस प्रकार प्रभावित करता है इसका विश्लेषण इस आधार पर किया जा सकता है कि विदेश की पत्र–पत्रिकाओं में उनकी यात्रा के विवरण को कितना स्थान दिया गया। इसी प्रकार समय का तात्पर्य रेडियो, टेलिविजन अथवा अन्य संचार माध्यमों पर प्रसारित कार्यक्रमों की अवधि से है। तात्पर्य यह है कि किसी कार्यक्रम की लोकप्रियता का मूल्यांकन इस आधार पर हो सकता है कि उसका कुल प्रसारण कितने समय तक हुआ। इसी प्रकार राजनीतिक दलों से संबंधित विचारों अथवा समाचारों के प्रसारण में कितना अधिक समय दिया गया इसे प्रमुख राजनीतिक दल का अन्य दलों के सापेक्ष बढ़ते प्रभाव के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

**10. इकाइयों का श्रेणियों में विभाजन** : अंतर्वस्तु विश्लेषण की विभिन्न इकाइयों का चुनाव कर लेने के पश्चात उन्हें कुछ निश्चित श्रेणियों अथवा वर्गों में विभाजित कर लिया जाता है, ऐसा करने से व्यवस्थित एवं विश्वसनीय तथ्य प्राप्त करने में सहायता मिलती है। उदाहरण के लिए व्यक्तित्व भेद के आधार पर परंपरागत और आधुनिक अथवा अंतर्मुखी और बहिर्मुखी व्यक्तित्व जैसी श्रेणियां बनाई जा सकती हैं। इसी प्रकार यदि कथन को आधार माना जाए तो सभी कथनों को काल्पनिक और वास्तविक, सार्थक और निरर्थक, प्रत्यक्ष व परोक्ष, सामान्य एवं महत्वपूर्ण आदि श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। अर्थात अंतर्वस्तु विश्लेषण में इकाइयों का निर्धारण करने के साथ–साथ इनसे विशेष श्रेणी अथवा वर्ग का निर्माण करना भी आवश्यक होता है।

**11. श्रेणियों का परीक्षण** : अंतर्वस्तु विश्लेषण की एक अन्य विशेषता है कि इसमें अध्ययन की इकाइयों के आधार पर एक वस्तुनिष्ठ या वैषयिक निष्कर्ष प्राप्त करना होता है। अतः यह आवश्यक है कि इकाई सूची में दी गई प्रत्येक सूची या श्रेणी का परीक्षण करें और उनकी विश्वसनीयता अथवा सार्थकता की जांच करें। श्रेणियों की प्रमाणिकता का परीक्षण करने के लिए यदि पहले से ही कुछ मापदंडों का निर्धारण कर लिया जाए तो यह कार्य अधिक सफलतापूर्वक किया जा सकता है। इस प्रकार समान मापदंडों के आधार पर सभी श्रेणियों का परीक्षण संभव हो सकता है।

**12. अध्ययन की रूपरेखा तैयार करना** : अध्ययन की इकाइयों के निर्माण तथा उनके श्रेणियों में विभाजन एवं परीक्षण के पश्चात अंतर्वस्तु विश्लेषण की वास्तविक रूपरेखा तैयार की जाती है। इस कार्य के लिए संबंधित विषयों अथवा चरों की एक सूची तैयार कर लेना आवश्यक होता है। इसके पश्चात विभिन्न चरों के महत्व को देखते हुए संकेतन का कार्य किया जाता है। इस प्रकार रूपरेखा का निष्कर्ष अध्ययनकर्त्ता को विषय पर केंद्रित करने में सहायक होता है।

**13. अंतर्वस्तु की इकाइयों का मापन** : अंतर्वस्तु विश्लेषण के इस स्तर पर अध्ययन विषय से संबंधित इकाइयो का सांख्यिकीय प्रविधियों द्वारा मापन, गणन एवं अभिव्यक्तिकरण संपन्न किया जाता है। अंतर्वस्तु विश्लेषण के इस स्तर से ही विश्लेषण की वास्तविक क्रियाओं का आरंभ होता है। विभिन्न इकाइयों को उनके महत्व के आधार पर जो भार प्रदान किया जाता है, उसकी गणना करके गुणात्मक अध्ययन को परिमाणात्मक स्वरूप में परिवर्तित करना संभव हो पाता है। तात्पर्य यह है कि एक अध्ययनकर्त्ता अंतर्वस्तु की

इकाइयों का माप जितनी अधिक कुशलतापूर्वक कर लेता है, विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष उतने ही वस्तुनिष्ठ अथवा वैषयिक हो जाते हैं।

**14. विश्लेषणात्मक व्याख्या** : अंतर्वस्तु विश्लेषण की इकाइयों एवं श्रेणियों के परिमाण हैं। ऐसी विश्लेषणात्मक व्याख्या तथ्यों के उचित वर्गीकरण एवं सारणीकरण द्वारा ही संभव हो पाती है। विश्लेषणात्मक व्याख्या के द्वारा तथ्यों में पाई जाने वाली समानताएं एवं विभिन्नताएं स्पष्ट हो जाती हैं। इन्हीं समानताओं और विभिन्नताओं के आधार पर एक विशेष तथ्य की विश्लेषणात्मक व्याख्या करना संभव हो पाता है।

**15. प्रतिवेदन निर्माण** : अंतर्वस्तु विश्लेषण के लिए तथ्यों, इकाइयों, श्रेणियों के चुनाव एवं परीक्षण तथा अंतर्वस्तु की इकाइयों के मापन और विश्लेषणात्मक व्याख्या करने के पश्चात अध्ययन के संबंध में अंतिम प्रतिवेदन तैयार किया जाता है। इस चरण में अंतर्वस्तु विश्लेषण से संबंधित संपूर्ण प्रक्रिया को व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है। प्रतिवेदन के अंतर्वस्तु मुख्य रूप से हम विश्लेषणों का वैज्ञानिक विवरण, उनकी व्याख्या देने के साथ यथासंभव सारणी ग्राफ का चित्र के माध्यम से विश्लेषण को प्रस्तुत करते हैं। इसके साथ ही आगामी अध्ययनों के लिए नवीन दिशाओं का संकेत भी दिया जाता है, इसी स्तर पर कुछ महत्वपूर्ण, कथनों, उदाहरणों तथा नमूनों की सहायता से प्रतिवेदन को रोचक एवं व्यावहारिक बनाने का भी प्रयत्न किया जाता है।

### 4.4.3 अंतर्वस्तु विश्लेषण का महत्व :

सामाजिक शोध की प्रविधियों में अंतर्वस्तु विश्लेषण एक नवीन प्रविधि है। जटिल तथ्यों के विश्लेषण करने में विद्वान इसके उपयोग तथा महत्ता को समझते हैं। सामान्यतः अंतर्वस्तु विश्लेषण का उपयोग सभी प्रकार के गुणात्मक तथ्यों के अध्ययन में किया जा सकता है। परंतु फिर भी जनसंचार अथवा समूह संप्रेषण के अध्ययन में अंतर्वस्तु विश्लेषण अत्यंत आवश्यक है। इसके अतिरिक्त अंतर्वस्तु विश्लेषण के महत्व को निम्न प्रकार समझा जा सकता है–

**1. गुणात्मक तथ्यों का–परिमाणात्मक तथ्यों में रूपांतरण** : अधिकांश सामाजिक घटनाओं, तथ्यों एवं समस्याओं की प्रकृति गुणात्मक, जटिल एवं सूक्ष्म होती है, जिसके कारण इनका वैज्ञानिक विश्लेषण करना कठिन हो जाता है। अंतर्वस्तु विश्लेषण इन गुणात्मक, जटिल एवं सूक्ष्म तथ्यों का श्रेणीकरण, सारणीकरण एवं मापन करके उन्हें परिमाणात्मक तथ्यों में रूपांतरित करता है। इस प्रकार इकाई अथवा बहुत सी इकाइयां जब अपनी अमूर्तता से

हटकर परिमाणात्मक रूप ग्रहण कर लेती हैं तब उनका वस्तुनिष्ठ अध्ययन एवं विश्लेषण करना संभव हो पाता है। उदाहरण के लिए नेताओं के भाषण, वार्तालाप, समाचार पत्र के संपादकीय कथन, कहानी, उपन्यास के पात्र के कथन आदि गुणात्मक तथ्य हैं जिनका वस्तुनिष्ठ अध्ययन करना कठिन प्रतीत होता है। लेकिन अंतर्वस्तु विश्लेषण में विशेष इकाइयों को आधार मानकर उनका इस प्रकार श्रेणीकरण और मापन किया जाता है कि निष्कर्षों को मात्राात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाना संभव हो जाता है।

**2. संचार संबंधी अध्ययनों में उपयोगी** : वर्तमान में संचार के विभिन्न साधनों के रूप में जनसंचार एवं अंतः वैयक्तिक साधनों का प्रयोग किया जाता है। इन संचार साधनों की प्रकृति एवं प्रभाव अमूर्त होता है, जिसके कारण इनका वस्तुनिष्ठ अध्ययन कर कोई निष्कर्ष देना कठिन प्रतीत होता है। अंतर्वस्तु विश्लेषण द्वारा न केवल विभिन्न संचार साधनों की प्रकृति को समझा जा सकता है बल्कि उनके तुलनात्मक प्रभाव का भी विश्लेषण किया जा सकता है। वृहत संचार माध्यमों के अध्ययन में अंतर्वस्तु विश्लेषण की उपयोगिता इस तथ्य से भी स्पष्ट हो जाती है कि इनके द्वारा सत्तावादी नेतृत्व के स्वरूपों का भी मूल्यांकन किया जा सकता है।

**3. प्रचार माध्यमों का विस्तार** : वर्तमान युग में जनसंचार के विभिन्न साधनों का एक प्रमुख कार्य प्रचार है। अंतर्वस्तु विश्लेषण में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। अंतर्वस्तु विश्लेषण के माध्यम से यह ज्ञात किया जा सकता है कि प्रचार में विभिन्न माध्यम, जनसामान्य को किस रूप में एवं किस सीमा तक प्रभावित करते हैं। ऐसे विश्लेषण से प्रचार साधनों के प्रभाव का अध्ययन कर नवीन प्रचार साधनों को विकसित किया जा सकता है, इसके अलावा यह भी समझा जा सकता है कि प्रचार के कुछ विशेष साधनों को किस प्रकार अधिक प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है अर्थात् अंतर्वस्तु विश्लेषण प्रचार माध्यमों का विस्तार करने की एक उपयोगी प्रणाली है।

**4. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संचार साधनों का तुलनात्मक अध्ययन** : संचार साधनों के रूप में मुख्यतः रेडियो, टेलीविजन, समाचार–पत्र अथवा पत्रिकाएं, इंटरनेट आदि आते हैं। इनमें प्रकाशित तथ्यों एवं सूचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना कभी–कभी आवश्यक होता है। उदाहरण के लिए भारत जैसे देश में जहां कुछ समाचार–पत्र एवं टेलीविजन चैनल सरकारी प्रभाव में हैं तथा कुछ उद्योगपतियों अथवा अन्य राजनीतिक दलों के प्रभाव में होते हैं इनमें एक ही समाचार की अंतर्वस्तु विभिन्न समाचार–पत्रों एवं न्यूज चैनलो में

भिन्न–भिन्न रूप में प्रकाशित होती है। इसके अतिरिक्त किसी अंतर्राष्ट्रीय समस्या से संबंधित सामग्री को भिन्न–भिन्न रूप में अभिव्यक्त किया जाता है। ऐसी स्थिति में अंतर्वस्तु विश्लेषण द्वारा एक तुलनात्मक अध्ययन करके वास्तविकता को ज्ञात किया जा सकता है।

**5. व्यक्तित्व संबंधी अध्ययनों में उपयोगी** : अंतर्वस्तु विश्लेषण का उपयोग व्यक्तित्व संबंधी अध्ययनों में भी किया जाता है, जैसे किसी व्यक्ति द्वारा दिए गए भाषण, वार्तालाप, लेख, कहानी अथवा उपन्यास आदि सामग्री का विश्लेषण करके उस व्यक्ति के व्यक्तित्व में निहित विचारों, आदर्शों, मूल्यों तथा अभिवृत्तियों, मनोवृत्तियों आदि को ज्ञात किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अंतर्वस्तु विश्लेषण द्वारा विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्वों की श्रेणियों का निर्माण करके व्यक्तित्व के कुछ विशेष प्रारूपों को भी ज्ञात किया जा सकता है। उदाहरण के लिए प्रेमचंद की रचनाओं के आधार पर कहा जाता है कि प्रेमचंद एक साम्यवादी एवं प्रगतिवादी विचारक होने के साथ ही शोषितों और उपेक्षितों के पक्षधर थे तब इस निष्कर्ष का आधार अंतर्वस्तु विश्लेषण ही होता है।

अंतर्वस्तु विश्लेषण की उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि जन संचार के क्षेत्र में अंतर्वस्तु विश्लेषण का उपयोग निरंतर बढ़ता जा रहा है।

### 4.4.4 अंतर्वस्तु विश्लेषण की प्रमुख समस्याएं :

अंतर्वस्तु विश्लेषण का उपयोग जनसंचार साधनों के प्रभाव एवं सार्थकता का मूल्यांकन करने में किया जाता है। इस प्रविधि के उपयोग में आने वाली अनेक व्यावहारिक समस्याओं का निम्नांकित वर्णन किया जा रहा है–

**1. वस्तुनिष्ठता की समस्या** : अंतर्वस्तु विश्लेषण के द्वारा गुणात्मक तथ्यों का श्रेणीकरण करके उन्हें कुछ वस्तुनिष्ठ तथ्यों में परिवर्तित किया जाता है। अध्ययनकर्त्ता द्वारा जिन तथ्यों को वस्तुनिष्ठ रुप में प्रस्तुत करने का दावा किया जाता है, उनकी वस्तुनिष्ठता की जांच किन आधारों पर की जाए यह समस्या आती है। उदाहरण के लिए– अंतर्वस्तु विश्लेषण प्रविधि का प्रयोग करने वाला शोधकर्त्ता यदि किसी नेता द्वारा दिए गए भाषण के वाक्यों को विभिन्न समाचार–पत्रों से संकलित करके उनके आधार पर एक निष्कर्ष देता है तो अन्य लोगों के पास इन भाषणों के अंशों अथवा उन पर आधारित विश्लेषण की वस्तुनिष्ठता का कोई ठोस आधार नहीं होता।

**2. समग्र को परिभाषित करने की समस्या** : अंतर्वस्तु विश्लेषण के द्वारा अध्ययन विषय के समग्र को परिभाषित करने की समस्या आती है। उदाहरण के लिए यदि 'राष्ट्रीय प्रेस' के

समग्र माने तो इसकी परिभाषा कैसे की जाए यह अत्यंत कठिन समस्या है। राष्ट्रीय प्रेस के समग्र मानने से व्यावहारिक एवं भावनात्मक कठिनाइयां उत्पन्न हो सकती हैं।

**3. परिमाण की समस्या** : जैसा कि विदित है कि अंतर्वस्तु विश्लेषण के द्वारा गुणात्मक तथ्यों को परिमाणात्मक अथवा मात्रात्मक तथ्यों में परिवर्तित करने का प्रयत्न किया जाता है। ऐसा करने में अध्ययनकर्त्ता के समक्ष दो प्रमुख कठिनाइयां आती हैं। पहली, विश्लेषण के लिए इकाइयों का निर्धारण किस प्रकार किया जाए, यहां यह ज्ञात है कि जनसंचार के क्षेत्र में इकाइयों के रूप में शब्द, वाक्य, पात्र, मद, स्थान अथवा समय आदि को लिया जाता है, इन्हें चुनने में परिमापन का आधार भावनात्मक हो जाता है। दूसरा गुणात्मक तथ्यों को परिमाणात्मक रूप में परिवर्तित करने में अध्ययनकर्त्ता द्वारा विभिन्न तथ्यों को एक समुचित भार देना, इसमें कठिनाई यह है कि जब गुणात्मक तथ्यों के कार्य कारण संबंध ज्ञात करना कठिन है, तो उन्हें एक समुचित भार किस प्रकार दिया जाए।

**4 समय की समस्या** : जन संचार साधनों से निदर्शन की एक और समस्या समय की समस्या है। किसी समाचार–पत्र की सामान्य नीति से परिचित होना कठिन कार्य नहीं है। समाचार–पत्र के दैनिक या मासिक प्रकाशन को पढ़कर हम सामान्य नीति का पता लगा सकते हैं। अगर अध्ययनकर्त्ता कई महीनों के समाचार–पत्रों से निदर्शन लेना चाहे तो यह प्रयत्न कठिन कार्य हो जाता है। जब तक अध्ययनकर्त्ता उन घटनाओं का निदर्शन व्यवस्थित रूप से न लेता रहे।

**5. श्रेणियों के निर्माण की समस्या** : अंतर्वस्तु विश्लेषण में विभिन्न चरों से संबंधित सामग्री को एक–एक श्रेणी में परिवर्तित करके उनका विश्लेषण किया जाता है। इसमें कठिनाई यह है कि शोधकर्त्ता के पास कोई भी ऐसे निश्चित मापदंड नहीं होते जिनको आधार मानकर वह श्रेणियों का निर्माण कर सके। इसके अतिरिक्त समान चरों पर आधारित अंतर्वस्तु को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित करने के लिए विभिन्न अध्ययनकर्त्ता अलग–अलग नियमों अथवा मापदंडों का उपयोग करते हैं। इसके फलस्वरूप अध्ययन में अनुरूपता का अभाव हो जाता है।

**6 प्रति निदर्शन की समस्या** : अंतर्वस्तु विश्लेषण के द्वारा सामान्यतः किसी कथन, विचार अथवा मूल्य से संबंधित इकाइयों का श्रेणीकरण करके एक सामान्य निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है तथा इसके द्वारा जनसंचार से संबंधित किसी विशेष साधन के प्रभाव का वास्तविक मूल्यांकन किया जाता है। इस संबंध में समस्या यह आती है कि यदि एक छोटे

से समूह अथवा किसी व्यक्ति विशेष के विचारों, कथनों अथवा शब्दों के आधार पर एक निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया हो तो उसका सामान्यीकरण किस प्रकार किया जाए। अंतर्वस्तु विश्लेषण के लिए अध्ययनकर्त्ता के पास इकाइयों के चुनाव अथवा निदर्शन के लिए कोई ठोस आधार नहीं होता।

उपरोक्त समस्याओं को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि विश्लेषणकर्त्ताओं अथवा अध्ययनकर्त्ताओं को विभिन्न इकाइयों, जैसे—कहानियां, संपादकीय, लेख, मुख्य शीर्ष के आधार पर विश्लेषण करना चाहिए। विश्लेषणकर्त्ता स्वयं भी अपने पढ़ने की आदत में इतना सुधार करे कि वह पढ़ते ही पता लगा सके कि कौन सी इकाइयां उसके निदर्शन का सही प्रतिनिधित्व कर सकती हैं। ऐसे कार्यों में धैर्य, चतुरता व अनुभव परमावश्यक है।

### 4.4.5 अपनी प्रगति जांचिए :

(च) अन्तर्वस्तु विश्लेषण का अर्थ परिभाषित करें।

(छ) अन्तर्वस्तु विश्लेषण के कारकों का वर्णन करो।

(ज) अन्तर्वस्तु विश्लेषण के कितने चरण होते हैं?

(झ) अन्तर्वस्तु विश्लेषण की प्रमुख समस्याएँ बताओ।

(ञ) अन्तर्वस्तु विश्लेषण की श्रेणियों को कितने आधारों पर विभाजित किया गया है?

### 4.4.6 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर :

(च) अन्तर्वस्तु विश्लेषण साक्षात्कारों, प्रश्नावलियों, अनुसूचियों तथा अन्य लिखित या मौखिक भाषा तथा अभिव्यक्तियों द्वारा प्राप्त अनुसंधान तथ्यों के अन्तर्वस्तु का क्रमबद्ध, वस्तुनिष्ठ तथा परिमाणात्मक वर्णन के लिए अपनाई जाने वाली एक प्रविधि है।

(छ) अन्तर्वस्तु विश्लेषण के कारण :

- प्रचार के तरीको का पता लगाना
- पाठ्य पुस्तकों का विश्लेषण
- साहित्यिक व मौलिक समस्याएँ

(ज) अन्तर्वस्तु विश्लेषण के 8 चरण होते हैं :

- विषय से संबंधित तथ्यों का चुनाव
- इकाईयों का चयन
- इकाईयों का श्रेणियों में विभाजन
- श्रेणियों का परीक्षण

- अध्ययन रूपरेखा की संरचना
- इकाईयों का मापन
- विश्लेषणात्मक संरचना
- प्रतिवेदन तैयार करना

(झ) अन्तर्वस्तु विश्लेषण की समस्याएँ :

- समग्र को परिभाषित करने की समस्या
- जनसंचार साधनों की समस्या
- निदर्शन की अच्छी प्रविधियों की समस्या

(ञ) अन्तर्वस्तु विश्लेषण की श्रेणियों को दो अन्य आधारों पर बाँटा जा सकता है :

- क्या कहा जा सकता है?
- कैसे कहा जा सकता है?

## 4.5 प्रतिवेदन लेखन

प्रत्येक सामाजिक सर्वेक्षण अथवा शोध का आधार वैज्ञानिक पद्धति व प्रविधियों द्वारा संकलित तथ्य हैं। पर तथ्यों का ढ़ेर स्वयं कुछ नहीं कर सकता जब तक कि उनका वर्गीकरण व सारणीयन न किया जाए। पर केवल वर्गीकरण व सारणीयन भी निरर्थक है जब तक इनके आधार पर तथ्यों का विश्लेषण व व्याख्या करके कुछ वैज्ञानिक निष्कर्षों को न निकाला जाए। इन निष्कर्षों को यदि सर्वेक्षणकर्त्ता या शोधकर्त्ता अपने दिमाग में ही भरकर रख दे तो उससे न तो विज्ञान का और न ही किसी और का कोई भला हो सकता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि सम्पूर्ण सर्वेक्षण व शोध–कार्य के उद्देश्य, क्षेत्र, प्रयुक्त पद्धति व प्रविधियों, संकलित तथ्यों का विवरण, विश्लेषण व व्याख्या तथा निष्कर्षों व सुझावों को एक लिखित रूप दिया जाए जिससे कि वह विज्ञान की एक धरोहर बन सके, दूसरे वैज्ञानिक उसी विषय के सम्बन्ध में फिर से अनुसन्धान कर उसके निष्कर्षों की पुनर्परीक्षा कर सकें तथा निष्कर्षों व सुझावों के आधार पर सामाजिक योजना व सुधार की रूपरेखा तैयार की जा सके। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सम्पूर्ण सर्वेक्षण शोध का एक लिखित विवरण तैयार किया जाता है। यही सर्वेक्षण या शोध की रिपोर्ट कहलाता है।

प्रतिवेदन के स्वरूप के सम्बन्ध में सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वह किस प्रकार के पाठकों को ध्यान में रखकर लिया गया है। शोध प्रतिवदेन के पाठकों में अन्य सामाजिक वैज्ञानिक बहुधा सबसे महत्वपूर्ण होते हैं। यदि शोध अनुप्रयुक्त विज्ञान के क्षेत्रों में हो तो उसके पाठकों में उसे प्रयुक्त करने वाले भी होने की सम्भावना है। जैसे यदि लोक प्रशासन या व्यापार प्रबन्ध के क्षेत्र में कोई शोध कार्य हुआ हो तो सम्भवतः प्रशासक या प्रबन्धक भी उसके विषय में जानना चाहेंगे। जन–साधारण के कुछ सदस्य भी उसमें रुचि रखने वाले हो सकते हैं। इन विभिन्न प्रकार के लोगों की रुचि और ज्ञान में भेद होगा। सामाजिक वैज्ञानिक तथा कुछ प्रशासन सांख्यिकीय तथा अन्य प्रकार के विश्लेषण को भी समझने और परखने की स्थिति में होंगे जबकि बहुत से अन्य पाठकों को इस विषय में उतना ज्ञान नहीं होगा। इसलिए प्रतिवेदन लिखते समय शोधकर्त्ता को यह ध्यान रखना होता है कि उसके पाठक मुख्यतया कौन होंगे और फिर इसे उनके अनुरूप बनाना होता है। यह भी हो सकता है कि प्रतिवेदन कई प्रकार से लिखा जाए – जैसे, एक तो वैज्ञानिक पाठकों के लिए और दूसरे जन–साधारण के लिए।

### 4.5.1 रिपोर्ट तैयार करने का उद्देश्य

### (Object of preparing the Report)

सर्वश्री गुडे एवं हॉट (Goode and Hatt) ने लिखा है कि शोध–प्रक्रिया वैज्ञानिक के लिए बड़ी ही रोचक तथा आकर्षक होती है। फिर भी आगे–पीछे कभी–न–कभी एक ऐसी स्थिति आती है जब कि रिपोर्ट तैयार करना आवश्यक हो ही जाता है किसी भी प्रकार के अध्ययन में एक स्थिति ऐसी आती ही है जबकि उसके पश्चात् अध्ययन–कार्य को चालू रखना अनुपयोगी एवं संकलित तथ्यों का और अधिक विश्लेषण व व्याख्या अनावश्यक प्रतीत होने लगती है। कभी–कभी ऐसा भी होता है कि किन्हीं पूर्व शर्तों के अनुसार एक वैज्ञानिक या आरम्भिक विद्यार्थी के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि वह एक निर्धारित समय के अन्दर शोध–कार्य को समाप्त कर उसके निष्कर्षों को प्रस्तुत करे। साथ ही शोध या सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त सामग्री एवं नवीन तथ्य इतने रुचिकर होते हैं कि अनुसन्धानकर्त्ता उसके परिणामों को अन्य लोगों तक पहुंचाने के लिए स्वयं उत्सुक रहता है। अन्त में, जिन–जिन लोगों ने अध्ययन–कार्य में अर्थ, सुझाव, सहायता व समय के रूप में योग दिया है, वे यह जानने के लिए उत्सुक रहते हैं कि उनके सहयोग या सहायता का

क्या परिणाम निकला। इन सब आवश्यकताओं व माँगों की पूर्ति करने के उद्देश्य से ही सर्वेक्षण के अन्तिम चरण में एक रिपोर्ट तैयार की जाती है।

उपरोक्त विवेचना के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि एक सर्वेक्षण या शोध की रिपोर्ट तैयार करने के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

**1. ज्ञान का एक प्रलेख प्रस्तुत करना (To present a Document of Knowledge)** : प्रत्येक सर्वेक्षण या शोध–कार्य का निष्कर्ष निश्चय ही किसी–न–किसी प्रकार के ज्ञान का एक स्रोत होता है। इसमें पर्याप्त समय, धन तथा परिश्रम भी लग जाता है। इसके बाद भी अगर अध्ययन से प्राप्त ज्ञान को शोधकर्त्ता केवल अपने ही दिमाग में रख लें तो उस ज्ञान की वास्तविक उपयोगिता स्वतः ही नष्ट हो जाएगी और दूसरों को उससे कोई लाभ नहीं होगा। अतः उसे एक क्रमबद्ध लिखित रूप प्रदान करना परमावश्यक है जिससे कि वह ज्ञान का एक लिखित प्रलेख (Document) बन जाए और विज्ञान की एक धरोहर के रूप में उसे सुरक्षित रखना सरल हो जाए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सर्वेक्षण या शोध की एक रिपोर्ट अवश्य ही तैयार की जाती है।

**2. ज्ञान के विस्तार के लिए (For the extension of Knowledge)** : रिपोर्ट तैयार करने का यह भी कम महत्वपूर्ण उद्देश्य नहीं है। पिछले अध्याय में हम लिख चुके हैं कि तथ्यों के विश्लेषण व व्याख्या से न केवल अध्ययन–विषय का ही स्पष्टीकरण होता है और न केवल उस विषय से सम्बन्धित ही कुछ निष्कर्ष निकलते हैं, अपितु इस बात की भी खोज हो जाती है कि उस विषय से सम्बन्धित अन्य कौन–कौन सी समस्याएँ हैं जिनके विषय में आगे और गहन अध्ययन किया जा सकता है। जब अपने शोध–कार्य तथा उसके निष्कर्षों को अनुसन्धानकर्त्ता एक लिखित रूप देने बैठता है तो वह स्वतः ही अन्य ऐसी अनेक नई समस्याओं, नए प्रश्नों तथा विषयों की ओर भी संकेत करता है जोकि शोध या सर्वेक्षण का विषय बन सकते हैं। इस दृष्टिकोण से रिपोर्ट का एक उद्देश्य अनुसन्धान के नए क्षेत्रों (avenues) से हमें परिचिति करवा कर ज्ञान के विस्तार की निरन्तरता को बनाए रखना है।

**3. अनुसन्धान के परिणामों को दूसरों के सूचनार्थ प्रस्तुत करना (To present the Results of the Investigation for others' Information)** : शोधकर्त्ता के लिए अपने अनुसन्धान के परिणामों को प्रदर्शित करना कई कारणों से आवश्यक हो जाता है। प्रथमतः शोध–कार्य

से प्राप्त निष्कर्षों या परिणामों को सम्बन्धित लोगों अथवा शोध में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के सामने प्रकट करना अनुसन्धानकर्त्ता का कर्तव्य हो जाता है। उदाहरणार्थ, यदि अनुसन्धान का विषय सार्वजनिक महत्व का है तो उसके परिणामों से लोगों को अवगत कराना आवश्यक हो जाता है। द्वितीयः यदि सर्वेक्षण की रिपोर्ट के आधार पर ही कोई सरकारी अथवा गैर सरकारी कार्यवाही होनी है तो भी यह काम रिपोर्ट तैयार न होने तक रुका रहता है। तृतीयतः कभी–कभी सरकार किसी विशेष विषय पर सर्वेक्षण इसलिए करवाती है कि उससे सम्बन्धित कोई योजना उसे बनानी होती है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भी रिपोर्ट तैयार करनी जरूरी हो जाती है। चतुर्थतः जिन लोगों ने सर्वेक्षण–कार्य में अपना धन, परामर्श, सहायता व समय देकर सहयोग प्रदान किया है, उन सभी के मन में सर्वेक्षण के परिणामों को जानने की स्वभाविक इच्छा होती है। उनकी सन्तुष्टि के लिए भी रिपोर्ट को तैयार किया जाता है। इसके अतिरिक्त, जब अनुसन्धान–कार्य किसी डिग्री या डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए किया जाता है तो उस उद्देश्य की पूर्ति तब तक नहीं हो सकती जब तक कि रिपोर्ट प्रस्तुत न की जाए। अन्त में, प्रायः सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त नवीन तथ्य इतने रोचक व रुचिकर प्रतीत होते हैं कि स्वयं अनुसन्धानकर्त्ता उनके परिणामों को अन्य लोगों को भी दिखाने व आत्मगौरव प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहता है। अनुसन्धान की एक व्यवस्थित रिपोर्ट तैयार हो जाने से उपरोक्त सभी छः उद्देश्यों की पूर्ति हो जाती है।

**4. विषयों में अन्तर्निहित वास्तविक स्थिति को समझाना (To Explain the Actual Conditions Involved)** : रिपोर्ट का उद्देश्य केवल अनुसन्धान के निष्कर्षों या परिणामों को व्यक्त करना ही नहीं अपितु उन्हें इसे व्यवस्थित व वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करना है कि अध्ययन–विषय के विभिन्न पक्षों की वास्तविकताएँ स्वतः ही प्रकट हो जाएँ और उस रिपोर्ट को पढ़ने वाला प्रत्येक व्यक्ति उनमें अन्तर्निहित वास्तविक स्थिति तथा अन्तः सम्बन्धों को स्पष्ट रूप में समझ सके। सर्वेक्षण या शोध की सार्थकता विषय को केवल स्वयं समझ लेने में नहीं अपितु दूसरों को भी समझाने में है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भी रिपोर्ट इस ढंग से तैयार की जाती है कि विषय में रुचि रखने वाले सभी व्यक्ति उसे पढ़कर लाभ उठा सकें तथा अनुसन्धान से प्राप्त नवीन तथ्यों व उनके समाजिक परिणामों को समझ सकें।

5. **वैधता की जाँच (Test of Validity)** : जब तक शोध या सर्वेक्षण रिपोर्ट को तैयार नहीं किया जाएगा, तब तक इस बात की जाँच नहीं की जा सकती कि वह अध्ययन प्रमाणिक व प्रयोग सिद्ध है अथवा नहीं। रिपोर्ट की जाँच करके ही यह बताया जाता है कि अनुसन्धान में शुद्ध तथा यथार्थ सामग्री के आधार पर निष्कर्ष निकाले गए हैं अथवा केवल अनुमान और संदेहात्मक सूचना ही अध्ययन का आधार है। रिपोर्ट में वर्णित तथ्य व निष्कर्ष सार्वजनिक रूप से प्रकाशित एक विषय बन जाता है। (यदि रिपोर्ट को सरकार के द्वारा गुप्त न रखा जाए)। अतः यदि किसी को भी अध्ययन की वैधता के सम्बन्ध में सन्देह होता है तो वह स्वयं फिर से अनुसन्धान कर उसके निष्कर्षों की परीक्षा व पुनर्परीक्षा कर सकता है। इस प्रकार की परीक्षा व पुनर्परीक्षा से या तो पहले वाले अध्ययन की वैधता सिद्ध होती है अथवा उसके निष्कर्षों को तथ्यपूर्ण रूप में गलत प्रमाणित किया जाता है। दोनों ही दशाओं में विज्ञान की प्रतिष्ठा बढ़ती है। इसलिए यह कहा जाता है कि परीक्षा व पुनर्परीक्षा के योग्य होना वैज्ञानिक अध्ययन का सबसे उल्लेखनीय गुण है। अतः इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भी रिपोर्ट तैयार करना आवश्यक हो जाता है।

### 4.5.2 अनुसन्धान प्रतिवेदन तैयार करने से सम्बन्धित कुछ सामान्य सिद्धान्त (General Principles of Preparation of Report)

1. प्रतिवेदन को पाठकों के प्रकार के अनुसार तैयार किया जाना चाहिए। पाठक तीन श्रेणियों में विभाजित किए जा सकते हैं– (क) विशेषज्ञ, (ख) जन–साधारण, (ग) प्रयोगिक अनुसन्धानकर्त्ता। प्रतिवेदन का उद्देश्य अनुसन्धानकर्त्ता के साथ–साथ संचार श्रोताओं के साथ संचार करना है।

2. प्रतिवेदन स्पष्ट तथा सार्थक होना चाहिए।

3. प्रतिवेदन के अन्तर्गत विस्तार एवं सूक्ष्मता का उचित समावेश होना चाहिए।

4. प्रत्येक स्थान पर समझने के लिए आवश्यक सूचना अवश्य दी होनी चाहिए।

5. पाठकों को समालोचना हेतु पर्याप्त सूचना प्रदान की जानी चाहिए।

6. धनात्मक एवं ऋणात्मक दोनों ही प्रकार के निष्कर्षों के साथ ही उन मदों का भी उल्लेख किया जाना चाहिए जिनसे अनुसन्धानकर्त्ता किसी भी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकता है।

7. यथासम्भव अध्ययन के परिणामों को अन्य अध्ययनों के परिणामों तथा सामान्य समस्याओं से सम्बन्धित किया जाना चाहिए।

8. यथासम्भव कार्य–रीतियों, विशिष्ट–समस्याओं तथा अन्य शीर्षकों से सम्बन्धित ऐसी सूचना को सम्मिलित किया जाना चाहिए जो अन्य अनुसन्धानकर्त्ता के लिए अभिरुचिपूर्ण हों।

9. सार्थकता परीक्षणों से प्राप्त परिणामों को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जाना चाहिए।

10. फुटनोटों (Foot-notes) का प्रयोग आवश्यकतानुसार अवश्य ही किया जाना चाहिए।

11. व्यावहारिक अनुसन्धान प्रतिवेदन में यह भी स्पष्ट रूप से बताया जाना चाहिए कि अनुसन्धान परिणामों का प्रयोग किस प्रकार किया जा सकता है तथा इनकी प्रायोगिकता सम्बन्धी सीमाएँ क्या हैं?

12. प्रतिवेदन का कार्य प्ररचना तैयार होते ही आरम्भ कर दिया जाना चाहिए तथा शीघ्रतिशीघ्र समाप्त किया जाना चाहिए।

13. अन्तरिम प्रतिवेदन (Interim Reports) तैयार करते रहना चाहिए। ऐसा करना विशेष रूप से व्यावहारिक अनुसन्धान में आवश्यक है।

14. प्रतिवेदन यथासम्भव सूक्ष्म होना चाहिए।

### 4.5.3 एक अच्छी रिपोर्ट की विशेषताएँ (Characteristics of a Good Report)

एक अच्छी रिपोर्ट की विशेषताओं के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद हो सकता है क्योंकि 'अच्छे'–'बुरे' की अवधारणा सबके लिए समान नहीं होती। फिर भी सर्वेक्षण की प्रक्रिया और रिपोर्ट को तैयार करना एक टेकनिकल काम होने के कारण एक अच्छी रिपोर्ट की कुछ आधारभूत विशेषताओं का उल्लेख किया जा सकता है। वे विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1. एक अच्छी रिपोर्ट का ऊपरी डाल–डाल स्वच्छ तथा आकर्षक होता है। सफेद रंग के अच्छे किस्म के कागज पर स्पष्ट तथा सुन्दर ढंग के टाइप से रिपोर्ट को छपवाया जाता है। साथ ही, उसे अधिक आकर्षक बनाने के लिए आकर्षक शीर्षकों, चित्रों, फोटो आदि का प्रयोग भी आवश्यकतानुसार किया जाता है।

2. रिपोर्ट की भाषा अत्यधिक सन्तुलित होती है। पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग आवश्यकतानुसार अवश्य ही करना पड़ता है। पर इस सम्बन्ध में, जैसा कि डॉ॰ श्यामचरण दुबे का सुझाव है, विषय का स्पष्टीकरण लेखक का उद्देश्य होता है और इसकी सिद्धि के

लिए पारिभाषिक शब्दावली–सम्बन्धी सैद्धान्तिक मतभेदों के प्रति लेखक किसी भी प्रकार के विशिष्ट–आग्रह अथवा दुराग्रह को अपनाता नहीं। साथ ही, इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि पारिभाषिक शब्दावली के अत्यधिक प्रयोग से रिपोर्ट कहीं इतनी बोझल और क्लिष्ट न हो जाए कि उसे समझने के लिए विशेषज्ञों की सहायता लेनी पड़े; दूसरी ओर, रिपोर्ट की भाषा ने आलंकारिक तथा साहित्यात्मक शैली भी इतना उग्र रूप धारण न कर ले कि तथ्यों की वास्तविकताओं पर कोई दूसरा ही रंग चढ़ जाए या तथ्यों को बढ़ा चढ़ाकर कहने से सत्यता प्रकट न हो सके। अतः भाषा तथा शैली के सौन्दर्य की ओर झुककर रिपोर्ट को अतिश्योक्तिपूर्ण तथा अस्वाभाविक बना देने की प्रकृति से दूर रहकर ही सन्तुलित भाषा में रिपोर्ट को तैयार किया जाता है।

3. एक अच्छी रिपोर्ट में एक ही प्रकार के तथ्यों को बार–बार दोहराया नहीं जाता क्योंकि ऐसा करने से रिपोर्ट को पढ़ते समय पाठक ऊब जाते हैं। तथ्यों में तार्किक क्रम अवश्य रहता है। अर्थात् स्वतन्त्र रूप से समझे जाने वाले तथ्य पहले आ जाते हैं और वे तथ्य बाद में प्रदर्शित किए जाते हैं जिनको समझने के लिए दूसरे तथ्यों की आवश्यकता पड़ती है।

4. एक अच्छी रिपोर्ट में तथ्यों का विश्लेषण व व्याख्या वैज्ञानिक तौर पर और सुस्पष्ट रूप में होती है ताकि रिपोर्ट को पढ़कर ही लोगों को यह विश्वास हो जाए कि रिपोर्ट में जो कुछ कहा गया है वह काल्पनिक नहीं है अपितु तथ्ययुक्त तथा प्रयोग–सिद्ध है। इसके लिए सूचनाओं के स्रोतों का उल्लेख रिपोर्ट में पृष्ठतल–टिप्पणियों आदि (Footnotes and Reference) के रूप में प्रत्येक अध्ययन में दे दिया जाता है।

5. एक अच्छी रिपोर्ट में जो भी निष्कर्ष निकाले जाते हैं वे सभी प्रमाणिक, विश्वसनीय तथा वैज्ञानिक विकास के उपयुक्त रूप में प्रमाण–सहित प्रस्तुत किये जाते हैं अर्थात् उन कारणों का भी उल्लेख किया जाता है जिन पर कि वह निष्कर्ष आधारित है।

6. एक अच्छी रिपोर्ट में व्यावहारिकता का तत्व भी स्पष्ट होता है। अर्थात् उच्चस्तरीय रिपोर्ट इस प्रकार की होती है कि उसे पढ़कर अधिक–से–अधिक लोग लाभ उठा सकें। इस प्रकार की रिपोर्ट से केवल ज्ञान की ही वृद्धि नहीं अपितु कुछ व्यावहारिक लाभ भी होता है। अच्छी रिपोर्ट सामाजिक प्रगति व समाज–सुधार से संबंधित भविष्य–योजनाओं के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान करती है।

7. एक अच्छी रिपोर्ट में अध्ययन–पद्धति व प्रविधियों, अध्ययन क्षेत्र, निदर्शन आदि के सम्बन्ध में स्पष्ट तथा विस्तृत विवरण होता है और साथ ही सूचना के सभी स्रोतों का उल्लेख किया जाता है। ऐसा करने का उद्देश्य यह होता है कि यदि किसी भी व्यक्ति को अध्ययन के निष्कर्षों के सम्बन्ध में सन्देह हो तो वह रिपोर्ट में उल्लेखित प्रविधियों आदि की सहायता से उन निष्कर्षों की वैधता की जाँच कर सकता है।

8. एक अच्छी रिपोर्ट के अध्ययन में आई कठिनाइयों तथा सर्वेक्षण की सीमाओं (Limitations) का भी स्पष्ट रूप में उल्लेख होता है। दूसरे शब्दों में, कमियों को छिपाकर अध्ययन के पूर्णतया यथार्थ होने की डींग नहीं हांकी जाती है। ऐसा न करने का एक और उद्देश्य होता है और वह यह है कि अध्ययन की कठिनाइयों व कमियों को ईमानदारी से स्वीकार करने पर भविष्य के अध्ययनों में अन्य सर्वेक्षणकर्त्ताओं द्वारा पहले से ही उनके सम्बन्ध में सचेत रहने तथा उन्हें दूर करने के लिए आवश्यक कदम उठाने का अवसर मिलता है।

### 4.5.4 प्रतिवेदन की रूपरेखा

### (Outline of Report)

एम. पार्टन ने प्रतिवेदन की निम्नलिखित रूपरेखा प्रस्तुत की हैं :

**1. प्रस्तावना सम्बन्धी सामग्री (Prefeatory Material) :**

(अ) शीर्षक पृष्ठ,

(ब) सन्दर्भ सारिणी,

(स) उदाहरणों, सारिणियों, एवं चार्टों की सूची,

(द) प्रस्तावना, प्राक्कथन अथवा संचारण पत्र,

(य) परिणामों का सारांश, सार अथवा संस्तुतियाँ।

**2. प्रतिवेदन का मजमून अथवा विषय (Subject & Matter of Report) :**

(अ) परिचय

(क) उद्देश्य–समस्या का कथन एवं परिभाषण,

(ख) विषय क्षेत्र–सर्वेक्षण का समय, स्थान एवं सामग्री,

(ग) संगठन एवं कार्यरीति (यहाँ सामान्य विवरण होना चाहिए किन्तु विस्तृत विवरण परिशिष्टों में होना चाहिए)

(i) प्रयोग में लाए गए ढंग एवं प्रविधियाँ,

(ii) अनुसूचियाँ अथवा प्रश्नावलियाँ अथवा प्रयुक्त पत्रों की प्रतिलिपियाँ,

(iii) इन्हें कभी–कभी परिशिष्टों में भी रखा जाता है।

(ब) परिणामों का विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण

(क) तथ्यों का प्रतिवेदन–आँकड़ों, सारिणियों, रेखाचित्रों इत्यादि का प्रस्तुतीकरण,

(ख) आँकड़ों का विश्लेषण एवं विवेचन,

(ग) प्रस्तुत किए गए आँकड़ों पर आधारित निष्कर्ष एवं सम्भव संस्तुतियाँ,

(घ) आवश्यक सामग्री का सूक्ष्म साराँश (यदि यह ऊपर एक में नहीं दिया गया है)।

**3. पूरक सामग्री (Supplementary Material) :**

(अ) परिशिष्ट (इनमें प्रायः सर्वेक्षण में प्रयुक्त प्रतिदर्शन एवं अन्य प्रणालियों का विस्तृत प्रतिवेदन होता है),

(ब) ग्रन्थ सूची,

(स) सूची,

(द) शब्द–संग्रह (यदि परिभाषा की आवश्यकता रखने वाले वैज्ञानिक शब्दों का प्रयोग किया हो)।

यदि अनुसन्धान कार्य विभिन्न चरणों में किया गया है तो रैचले मार्क्स द्वारा प्रस्तावित निम्नलिखित रूपरेखा को प्रयोग में लाया जा सकता है–

## शीर्षक (Heading)

1. सामान्य परिचय,

2. सामग्री एवं ढँगों का सामान्य विवरण,

**3. प्रथम चरण :**

(अ) परिचय

(ब) सामग्री एवं ढँग,

(स) परिणामों का प्रस्तुतीकरण,

(द) परिणामों पर विचार–विमर्श।

**4. द्वितीय चरण :**

(अ) परिचय

(ब) सामग्री एवं ढँग,

(स) परिणामों का प्रस्तुतीकरण,

(द) परिणामों पर विचार—विमर्श

**5. तृतीय चरण :**

(अ) परिचय

(ब) सामग्री एवं ढँग,

(स) परिणामों का प्रस्तुतीकरण,

(द) परिणामों पर विचार—विमर्श

6. सामान्य विचार—विमर्श।

### 4.5.5 अनुसन्धान—प्रतिवेदन की प्रमुख कसौटियाँ

### (Major Criteria of Research Report)

एक अच्छे प्रतिवेदन की प्रमुख कसौटियाँ निम्नलिखित निश्चित की जा सकती हैं—

1. क्या प्रतिवेदन में शोध समस्या (प्राक्कल्पना) को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है?
2. क्या प्रतिवेदन में अध्ययन की सामग्री एवं विषय—क्षेत्र को स्पष्ट रूप से लिखा गया है?
3. क्या प्रतिवेदन में प्रयोग की गई अवधारणाओं को परिभाषित किया गया है?
4. क्या प्रतिवेदन में तथ्य—संकलन की प्रविधियों का स्पष्ट वर्णन किया गया है?
5. क्या प्रतिवेदन में वर्गीकरण, संकेतीकरण, सारणीयन एवं अन्य उदाहरणों सम्बन्धी सामग्री का उपयोग तर्कसंगत, क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रूप से किया गया है?
6. क्या प्रतिवेदन को कहीं तोड़—मरोड़ कर तो प्रस्तुत नहीं किया गया है?
7. क्या शोध की सीमाओं का स्पष्ट वर्णन किया गया है?
8. क्या पाठकों की दृष्टि से प्रतिवेदन की भाषा, शैली आदि सरल और बोधगम्य है?
9. क्या प्रतिवेदन को व्यवस्थित एवं सावधानीपूर्वक तरीकों से प्रस्तुत किया गया है?
10. क्या परिणामों की शोधकर्त्ता ने अन्य सम्बन्धित उपलब्ध शोध—परिणामों से तुलना की है?
11. क्या शोधकर्त्ता ने विषय से सम्बन्धित भविष्य में शोध की सम्भावनाओं के लिए सुझाव दिए हैं?

### 4.5.6 अनुसन्धान–प्रतिवेदन का प्रकाशन

### (Publication of Research Report)

अनुसन्धान के प्रतिवेदन का प्रकाशन एवं उसकी सफलता अनेक कारकों पर आधारित होती हैं। कुछ प्रमुख कारकों को यहाँ पर प्रस्तुत किया जा रहा है–

1. प्रतिवेदन के विषय की रुचि का क्षेत्र क्या है? उसके पाठक किस वर्ग एवं श्रेणियों के हैं? उनकी सम्भावित संख्या क्या होगी? प्रतिवेदन का पाठक–समाज में महत्त्व क्या होगा?
2. प्रतिवेदन का आकार, पृष्ठों की संख्या, प्रत्येक पृष्ठ पर शब्दों की संख्या कितनी होगी? सारणियों, रेखाचित्रों आदि की संख्या एवं प्रकृति कैसी है?
3. प्रतिवेदन का प्रकाशन–मूल्य कितना होगा? उसका विक्रय–मूल्य कितना होगा? प्रकाशक एवं शोधकर्त्ता का लाभ का क्या प्रतिशत होगा?
4. संस्करण का आकार क्या होगा?
5. प्रतिवेदन के भविष्य में संस्करणों के प्रकाशन की क्या सम्भावनाएँ हैं?
6. प्रतिवेदन के शोधकर्त्ता की योग्यता क्या हैं? उसके प्रतिवेदन की सफलता की सम्भावना क्या है?

### 4.5.7 अपनी प्रगति जांचिए :

(ट) प्रतिवेदन से क्या अभिप्राय है ?

(ठ) अनुसंधान प्रतिवेदन लेखन से संबंधित कुछ सामान्य सिद्धान्त बताओ।

(ड) एक अच्छे प्रतिवेदन लेखन की विशेषताएँ बताओ।

(ढ) प्रतिवेदन की रूपरेखा को कितने भागों में बांटा जाता है?

(ण) वैज्ञानिक प्रतिवेदन से किन तीन मुख्य उद्देश्यों की पूर्ति होती है?

(त) शोध की व्याख्या में किन तीन बातों का समावेश होता है?

### 4.5.8 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर :

(ट) अनुसंधान के निष्कर्षों की पुनर्परीक्षा करने व इससे सामाजिक योजना व सुधार की रूपरेखा तैयार हुई या नहीं, इन्ही उद्देश्यों की पूर्ति की जाँच के लिए सम्पूर्ण सर्वेक्षण शोध का एक लिखित विवरण तैयार किया जाता है। यही प्रतिवेदन कहलाता है।

(ठ) प्रतिवेदन लेखन के सामान्य सिद्धान्त :

–प्रतिवेदन पाठकों के अनुसार तैयार होता है।

– स्पष्ट व सार्थक होना चाहिए।

– समालोचना हेतु पर्याप्त सूचना प्रदान की जानी चाहिए।

– विस्तार व सूक्ष्मता का उचित समावेश हो।

(ङ) अच्छे प्रतिवेदन लेखन की विशेषताएँ :

– भाषा संतुलित होती है।

– ऊपर कवर स्वच्छ व आकर्षक होता है।

– एक ही प्रकार के तथ्यों को बार–बार दोहराया नहीं जाता है।

– तथ्यों का विश्लेषण व व्याख्या वैज्ञानिक आधार पर होती है।

(ढ) प्रतिवेदन की रूपरेखा को प्रमुख रूप से तीन भागों में बांटा जाता है :

(1) प्रस्तावना संबंधी सामग्री

(2) प्रतिवेदन का विषय

(3) पूरक सामग्री

(ण) वैज्ञानिक प्रतिवेदन से तीन मुख्य उद्देश्यों की पूर्ति होती है :

(1) ज्ञान के संदर्भ में उस शोध का स्थान क्या है ?

(2) अन्य वैज्ञानिक यह जान पाते हैं कि उस शोध से निष्कर्ष किस प्रकार निकाले गए हैं।

(3) शोध में प्रयुक्त सारी प्रक्रियाएँ प्रतिवेदन में ब्योरेवार दी रहती हैं।

(त) शोध की व्याख्या में तीन बातों का समावेश होता है :

(1) शोध से निकले अनुमान दूसरी परिस्थितियों में किस सीमा तक लागू हो सकते हैं ?

(2) शोध की कौन सी विशिष्ट परिस्थितियाँ अनुमानों के सामान्यीकरण को सीमित करती हैं ?

(3) शोध से किन प्रश्नों का उत्तर नहीं मिल सका या कौन से नये प्रश्न उठे?

## 4.6 सामाजिक अनुसन्धान में वस्तुनिष्ठता

## (Objectivity in Social Research)

यथार्थता किसी भी विज्ञान की प्रारम्भिक आवश्यकता है, और केवल आवश्यकता ही नहीं, अपितु परम उद्देश्य भी है। इस उद्देश्य की प्राप्ति तब तक सम्भव नहीं है जब तक हम तथ्यों को ठीक उसी रूप में खोज न निकाले तथा उनका विश्लेषण न करें जिस रूप में वे वास्तव में हैं। वास्तविक रूप में एक घटना–विशेष का अध्ययन करना वस्तुनिष्ठ अध्ययन कहलाता है। इसके विपरीत, व्यक्तिनिष्ठ या वैषयिक अध्ययन का तात्पर्य उस अध्ययन से है जिसमें अनुसंधानकर्त्ता के मनोभावों या विचारों की प्रधानता होती है, जबकि वस्तुनिष्ठ अध्ययन में तथ्य प्रधान होता है। व्यक्तिनिष्ठ अध्ययन वर्णनात्मक तथा वस्तुनिष्ठ अध्ययन विश्लेषणात्मक होता है। व्यक्तिनिष्ठ अध्ययन के निष्कर्ष अनुसंधानकर्त्ता के अपने मस्तिष्क की उपज होते हैं, जबकि वस्तुनिष्ठ अनुसंधान वास्तविक तथ्यों के वास्तविक अवलोकन, परीक्षण व विश्लेषण पर आधारित होता है। प्रथम में व्यक्ति बोलता है तथा सत्य पर पर्दा डालने की कोशिश करता है, परन्तु दूसरे में स्वयं तथ्य बोलता है और सत्य की खोज करता है। इसलिए विज्ञान, जो कि सत्य की खोज का एक साधन है, वस्तुनिष्ठ अध्ययन को ही अपना आधार मानता है और वस्तुनिष्ठता की प्राप्ति के प्रति सदैव सचेत रहता है। परन्तु यह कार्य इतना सरल नहीं है क्योंकि व्यक्ति सामाजिक घटनाओं का अपनी इन्द्रियों द्वारा निरीक्षण तथा परीक्षण करता है और विभिन्न सामाजिक घटनाओं व परिस्थितियों के प्रति इन इन्द्रियों का प्रत्युत्तर प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान नहीं होता है। जैसे हम लोकप्रशासन की परिभाषा को ही लेते हैं तो विभिन्न विचारक या सामाजिक वैज्ञानिक इसको अपने–अपने ढंग से परिभाषित करते हैं। कुछ विचारक तो इसका सम्बन्ध केवल कार्यपालिका से बताते हैं, जहां पर सरकार का कार्य मुख्य रूप से होता है, कुछ इसका सम्बन्ध सरकार के तीनों स्तम्भों से बताते हैं जैसे कार्यपालिका, विधानपालिका तथा न्यायपालिका और कुछ इसको लोक नीति को पूर्ण करने अथवा क्रियान्वित करने के साधन के रूप में परिभाषित करते हैं। इस प्रकार की विविधता के कारणों को लुण्डबर्ग (Lundberg) ने इस प्रकार उल्लेखित किया है।

1. किसी भी घटना को प्रत्यक्ष करने की शक्ति बहुत–कुछ प्रशिक्षण तथा अन्य शारीरिक व मानसिक अवस्थाओं पर निर्भर करती है और ये सभी प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न–भिन्न होती हैं।

2. किसी भी घटना के प्रति हमारा प्रत्युत्तर भौतिक तथा पर्यावरण–सम्बन्धी (Environmental) अवस्थाओं – जैसे थकान, आयु, तापक्रम आदि द्वारा प्रभावित होता है।

3. किसी घटना विशेष को हम किस रूप में ग्रहण करेंगे और किस प्रकार उसका विश्लेषण करेंगे यह हमारे पिछले अनुभवों पर निर्भर करता है। कहा जाता है कि 'मनुष्य अपने भूतकाल की आँखों से निरीक्षण करता है।' भूतकाल की ये आँखें या पिछले अनुभव प्रत्येक व्यक्ति के एक नहीं होते। इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति किसी घटना को न तो वस्तुनिष्ठ रूप में और न ही समान रूप में देख पाता है। सामाजिक अनुसन्धानों में वस्तुनिष्ठता की प्राप्ति इसी कारण कठिन होती है और इसी कठिनाई में तथ्यों के खोज की समस्याएँ निहित हैं। पर इस सम्बन्ध में और कुछ विवेचना करने से पूर्व वस्तुनिष्ठता के अर्थ को समझ लेना उचित होगा।

### 4.6.1 वस्तुनिष्ठता का अर्थ तथा परिभाषा

### (Meaning and Definition of Objectivity)

'वास्तव में जैसा है' विशेष का अध्ययन करना वस्तुनिष्ठ अध्ययन कहलाता है। तटस्थ और पक्षपात रहित निरीक्षण द्वारा तथ्यों का उनके वास्तविक रूप में संकलन और विश्लेषण ही वस्तुनिष्ठता है। वस्तुनिष्ठ अध्ययन विश्लेषणात्मक होता है। वस्तुनिष्ठ अध्ययन वास्तविक तथ्यों के वास्तविक अवलोकन, परीक्षण और विश्लेषण पर आधारित होता है। अपने स्वयं की भावना, विचार, उचित–अनुचित के आदर्श, विश्वास, आशा और आकांक्षाओं के रंग में न रंगकर किसी भी तथ्य या घटना को 'जैसा वह है' उसी रूप में देखना और विवेचना करना वस्तुनिष्ठता अथवा वैषयिकता है। घटना या तथ्य का यह वास्तविक रूप बुरा हो सकता है, कटु हो सकता है, अनुसन्धानकर्त्ता के अपने आदर्शों तथा मूल्यों के विपरीत हो सकता है, फिर भी उस घटना को यदि वह उसके मूल रूप में देखता है और समझता है तो वह वस्तुनिष्ठता को प्राप्त करने में सफल होता है। वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण रखने वाला अनुसन्धानकर्त्ता केवल सत्य को ही देखता है। विभिन्न सामाजिक वैज्ञानिकों ने वस्तुनिष्ठता को भिन्न–भिन्न रूप से परिभाषित किया है, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

लावल कार (Lowell Carr) के अनुसार, "सत्य की वस्तुनिष्ठता का अर्थ यह है कि घटनामय संसार के किसी व्यक्ति के विश्वासों, आशाओं अथवा भय से स्वतंत्र एक वास्तविकता है जिसको हम अंतर्दृष्टि और कल्पना से नहीं, बल्कि वास्तविक अवलोकन के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।"

ग्रीन (Green) के अनुसार, "वस्तुनिष्ठता प्रमाण की निष्पक्षता से परीक्षण करने की इच्छा एवं योग्यता है।"

फेयरचाइल्ड (Fairchild) के अनुसार, "वस्तुनिष्ठता या वैषयिकता का अर्थ उस योग्यता से है जिसमें एक अनुसंधानकर्त्ता स्वयं को उन परिस्थितियों से अलग रख सके जिसमें वह सम्मिलित है और द्वेष व उद्वेग के स्थान पर निष्पक्ष प्रमाणों या तर्क के आधार पर तथ्यों को उनकी स्वाभाविक पृष्ठभूमि में देख सके।"

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि वस्तुनिष्ठता वैज्ञानिक अनुसन्धान की वह स्थिति है जिसमें संसार की विभिन्न घटनाओं या तथ्यों की वास्तविकता प्रकट होती है और हमारे लिए सत्य का ज्ञान सम्भव होता है। घटनामय संसार की वास्तविकता सत्य की खोज की कुंजी है और वस्तुनिष्ठता उसी कुंजी से समस्त रहस्यों का रहस्योद्घाटन करने का एक समाधान है। इस प्रकार वैषयिकता वैज्ञानिक अनुसन्धान की आधारशिला है। अतः इसके विषय में विस्तृत विवेचना की आवश्यकता है।

### 4.6.2 सामाजिक अनुसन्धान में वस्तुनिष्ठता का महत्त्व

### (Importance of Objectivity in Social Research)

सामाजिक अनुसन्धान और वस्तुनिष्ठता का संबंध बड़ा गहरा है। वस्तुनिष्ठता के बिना अनुसन्धान को वैज्ञानिक रूप नहीं दिया जा सकता। उदाहरण के लिए यदि किसी घटना विशेष का अध्ययन किया जाये, तो वस्तुनिष्ठता के अभाव में विभिन्न व्यक्ति उससे विभिन्न प्रकार के परिणाम निकालेंगे। ऐसी स्थिति में अनुसंधानकर्त्ता के पक्षपात के कारण वास्तविक तथ्यों पर प्रकाश नहीं पड़ता। अतः किसी एक घटना या समस्या के अध्ययन को वैज्ञानिक रूप देने के लिए उसमें वस्तुनिष्ठता का होना आवश्यक है। यदि सामाजिक अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता है तो विभिन्न शोधकर्त्ताओं को किसी एक घटना के अध्ययन से एक ही प्रकार के निष्कर्ष प्राप्त होंगे। सामाजिक अनुसन्धान में वस्तुनिष्ठता के महत्त्व को निम्न तथ्यों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :

**1. उचित रूप से प्रतिनिधित्व करने वाले तथ्यों की प्राप्ति के लिए (To Get an Adequate Representative Facts) :** अध्ययन इस प्रकार का होना चाहिए जिससे कि अध्ययन–वस्तु सभी पक्षों का समुचित स्पष्टीकरण हो। यह तब तक सम्भव नहीं जब तक कि अध्ययन में इस प्रकार के तथ्यों का संकलन नहीं किया जाता जोकि एक सामाजिक घटना के विभिन्न पक्षों का उचित प्रतिनिधित्व कर सकें और उस घटना से सम्बद्ध विभिन्न पक्षों के सम्बन्ध में एक संतुलित ज्ञान प्राप्त कर सके और यह तभी सम्भव है जब वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण को अपनाया जाए।

**2. सत्यापन के लिए (For verification) :** अध्ययन में वस्तुनिष्ठता है यह इस बात पर निर्भर करता है कि हमारा अध्ययन हमारे अपने विचारों, भावनाओं व कल्पनाओं द्वारा प्रभावित नहीं बल्कि वास्तविक तथ्यों पर आधारित है। वही सामाजिक अनुसन्धान विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है जिसकी कि हम कभी भी पुनः परीक्षा अथवा सत्यापन कर सकें। सत्यापन या पुनः परीक्षा का तत्व वैज्ञानिकता की एक आवश्यक शर्त है और इस शर्त की पूर्ति वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण को अपनाए बिना सम्भव नहीं है। हमारा अध्ययन किस सीमा तक पुनः परीक्षा या सत्यापन के योग्य है। यह इस बात पर निर्भर करेगा कि किस सीमा तक वस्तुनिष्ठता को प्राप्त कर लिया गया है।

**3. नए अनुसन्धानों की सम्भावनाओं को विकसित करने के लिए (To Explore Possibilities of New Investigations) :** वस्तुनिष्ठता की प्राप्ति के दौरान हम एक घटना से सम्बन्धित अनेक नई समस्याओं को समझते हैं और उनके विषय में अध्ययन करने की प्रवृत्ति हमारे अन्दर पैदा होती है। वास्तविकता यह है कि वस्तुनिष्ठता केवल एक सत्य को ही नहीं ढूंढ़ निकालती, बल्कि अन्य अनेक सम्भावित सत्यों की ओर संकेत भी करती है जिनके विषय में अनुसन्धान करने की इच्छा अन्य अनुसन्धानकर्त्ताओं में पैदा हो सकती है।

**4. समाजिक–विज्ञान को वैज्ञानिक स्थिति प्रदान करने के लिए (To attribute scientific status of Sociology) :** समाजिक–विज्ञान को यथार्थ विज्ञान न मानने वाले यह तर्क पेश करते हैं कि समाजिक–विज्ञान में वैषोयिक अध्ययन नहीं होता है क्योंकि अनुसन्धानकर्त्ता अपना दृष्टिकोण, सत्यता की खोज में सट्टेबाजी, पक्षपात, विशिष्ट आदर्श को प्रस्थापित करने की अभिलाषा रखता है और ऐसा होने से इस धारणा को पनपने में सहायक हुआ है कि सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करने वाला विज्ञान 'समाजिक–विज्ञान' वैज्ञानिक

स्थिति को प्राप्त नहीं कर सकता। समाजशास्त्र को इस आरोप से बचाने के लिए सामाजिक घटनाओं के अध्ययन में वस्तुनिष्ठता की प्राप्ति बहुत आवश्यक है। यह प्रमाणित हो चुका है कि सामाजिक घटनाओं का भी वस्तुनिष्ठ अध्ययन सम्भव है। आज जरूरत इस बात की है कि सामाजिक अनुसन्धान में पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण, कल्पना तथा पूर्वधारणा से अपने को विमुक्त रखते हुए सामाजिक घटनाओं की वास्तविकताओं को जानने का लगातार प्रयत्न करें। समाजिक–विज्ञान को वैज्ञानिक स्थिति प्रदान करने का और कोई विकल्प नहीं। इसीलिए इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वस्तुनिष्ठता जरूरी है।

**5. वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग के लिए (For use of Scientific Method) :** सामाजिक घटनाओं के अध्ययन में वैज्ञानिक पद्धति का अपनाया जाना अध्ययन की यथार्थता के लिए पहली शर्त है। कोई भी अध्ययन कार्य ठीक होगा या गलत यह इस बात पर निर्भर करेगा कि अध्ययनकर्त्ता वैज्ञानिक पद्धति का ठीक ढंग से प्रयोग कर रहा है या नहीं। परन्तु वैज्ञानिक पद्धति का समुचित प्रयोग तब तक नहीं हो सकता जब तक कि उसमें वस्तुनिष्ठता का अभाव हो। इसीलिए वैज्ञानिक पद्धति की पहली शर्त वस्तुनिष्ठता है और इसकी प्राप्ति वस्तुनिष्ठ पद्धति द्वारा ही सम्भव है। इसलिए यदि हमारा उद्देश्य समाजशास्त्र में वैज्ञानिक पद्धति का सफल प्रयोग है तो अपने अध्ययन में वस्तुनिष्ठता लाने का हमें प्रयत्न करना होगा।

**6. सामाजिक घटनाओं के सम्बन्ध में वास्तविक ज्ञान की वृद्धि के लिए (For Advancement of Knowledge About Social Phenomena) :** वस्तुनिष्ठता वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति की आधारशिला है। इस आधारशिला के बिना हमारे वर्तमान ज्ञान–भण्डार की समृद्धि असम्भव है। यदि वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से सामाजिक घटनाओं का अध्ययन किया जाए तो उन घटनाओं के सम्बन्ध में हमारे वास्तविक ज्ञान की वृद्धि होती जाएगी। कोई भी समाजशास्त्री यदि अज्ञानता के अन्धकार को दूर करना चाहता है तो उसे वैषयिक दृष्टिकोण अपनाना होगा।

**7. निष्पक्ष निष्कर्षों की प्राप्ति के लिए (To Achieve Unprejudiced Conclusions) :** सामाजिक अनुसन्धान में वस्तुनिष्ठता का महत्त्व यह है कि इसके बिना निष्पक्ष निष्कर्षों तक पहुँचना अनुसन्धानकर्त्ता के लिए सम्भव नहीं होगा। वस्तुनिष्ठता का अर्थ ही है पक्षपात रहित होकर घटनाओं की वास्तविकताओं को ढूंढ़ निकालना। इसीलिए अनुसन्धानकर्त्ता के

लिए निर्भर योग्य निष्कर्षों तक पहुँचने के लिए तब तक सम्भव नहीं जब तक उसमें वस्तुनिष्ठ अध्ययन करने की क्षमता न हो। वस्तुनिष्ठ अध्ययन द्वारा ही अध्ययनकर्त्ता के लिए यह सम्भव होता है कि वह अपने व्यक्तिगत पक्षपातों, मूल्यों तथा आदर्शों आदि से स्वतन्त्र रहते हुए किसी सामाजिक घटना के सम्बन्ध में निर्णय योग्य निष्कर्षों को निकाल सके।

### 4.6.3. वस्तुनिष्ठता को प्राप्त करने में कठिनाइयाँ (Difficulties in Obtaining Objectivity)

सामाजिक अनुसन्धान में वस्तुनिष्ठता का स्थान बड़ा महत्त्वपूर्ण है। किंतु इसे प्राप्त करने में अनेक कठिनाइयां हैं। इन कठिनाइयों का उल्लेख निम्न प्रकार से किया जा सकता है :

**1. भावात्मक प्रभाव (Emotional Effect) :** सामाजिक अनुसन्धान में, जिन सामाजिक घटनाओं का अध्ययन किया जाता है, वे भावात्मक प्रभाव से परिपूर्ण होती हैं। भौतिक विज्ञानों की भांति सामाजिक विज्ञानों में अनुसन्धानकर्त्ता अपने को घटना के प्रभाव से वंचित नहीं कर सकता। भौतिक विज्ञानों की विषय–वस्तु, भौतिक पदार्थ हैं। इन पदार्थों का अध्ययन, अनुसन्धानकर्त्ता के ह्रदय में कोई प्रभाव उत्पन्न नहीं करता। लेकिन सामाजिक अनुसन्धान में, मनुष्य की संस्कृति, सभ्यता, व्यवहार अथवा प्रवृत्ति का अध्ययन किया जाता है, जिससे शीघ्र ही अनुसंधानकर्त्ता इनसे प्रभावित हो जाता है। इसके फलस्वरूप पक्षपातपूर्ण स्थिति पैदा हो जाती है। अनुसन्धानकर्त्ता इस प्रकार अपने निष्कर्ष को तटस्थ नहीं कर पाता।

**2. विषय–वस्तु की जटिलता (Complexity of Subject Matter) :** सामाजिक अनुसन्धान में, वैयक्तिकता प्राप्त करने में द्वितीय कठिनाई अध्ययन की विषय वस्तु के कारण पैदा होती है। सामाजिक जीवन अत्यंत जटिल और उलझा हुआ है। सामाजिक जीवन के अधिकांश तत्त्व अस्थायी हैं। उनमें सामाजिक परिवर्तन के साथ–साथ अंतर उत्पन्न होता है।

**3. एकरूपता का अभाव (Lack of Uniformity) :** सामाजिक समस्याओं के बारे में एक उल्लेखनीय तथ्य यह है कि इनमें एकरूपता का नितांत अभाव है। एक प्रकार की समस्या का स्वरूप, विभिन्न काल में अलग–अलग होता है। भौतिक विज्ञानों के अंतर्गत समस्या का

स्वरूप प्रत्येक काल में समान होता है। लेकिन सामाजिक समस्याओं की प्रकृति बदलती रहती है। उनमें एकरूपता स्थिर नहीं रहती है। इसके अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों की भौगोलिक परिस्थितियों की भिन्नता एकरूपता को उत्पन्न नहीं होने देती।

4. **नैतिक प्रभाव (Moral Effects) :** अनुसन्धानकर्त्ता के नैतिक आदर्शों का प्रभाव भी वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने में कठिनाई पैदा करता है। लुंडबर्ग का मत है कि सामाजिक अनुसंधान में अशुद्धता उत्पन्न होने का एक सामान्य कारण अनुसन्धानकर्त्ता का नैतिक पक्षपात है। अनुसन्धानकर्त्ता तथ्यों के संकलन और विवेचन करने में नैतिक आदर्शों का भी ध्यान रखता है। इनका प्रभाव मनुष्य के हृदय में इतना दृढ़ होता है कि वह प्रायः इनके विपरीत किसी भी निष्ठता को स्वीकार नहीं करता। विज्ञान तभी तक शुद्ध है, जब तक कि वह शोधकर्त्ता के नैतिक प्रभाव से दूर हो। लेकिन अनुसन्धानकर्त्ता का नैतिक प्रभाव, परिणाम को प्रभावित करता है तो इससे अशुद्धता पैदा हो जाती है। इसलिए अनुसन्धानकर्त्ता का नैतिक प्रभाव वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने में कठिनाई पैदा करता है।

5. **मौलिक तथ्यों पर प्रभाव (Effects on Fundamental Facts) :** अनुसन्धानकर्त्ता का लक्ष्य निहित घटनाओं में मौलिक तथ्यों का वर्णन करना है। यह मौलिक तथ्य अपने सजातीय तथ्यों का प्रतिनिधि होता है। अगर ऐसा नहीं होगा तो अनुसन्धान सार्वभौमिक सत्य का आधार नहीं बन सकता। यदि वह अपनी ओर से अध्ययन में थोड़ा–सा भी अपना निर्णय जोड़ता है। तो तथ्यों की मौलिकता समाप्त हो जाती है। इसलिए तथ्यों को वास्तविक दशाओं में दर्शाने के लिए वस्तुनिष्ठता की अत्यंत आवश्यकता है।

6. **निष्पक्ष निष्कर्ष की प्राप्ति (For Unprejudiced Conclusion) :** अनुसन्धानकर्त्ता को अपने अध्ययन के पश्चात् ऐसे निष्कर्षों को प्रस्तुत करना चाहिए जो वास्तविकता तथा प्रमाणिकता पर आधारित हों। जनसाधारण इन निष्कर्षों को तभी स्वीकार कर सकता है जब यह पक्षपात और स्वार्थपरता से रहित होंगे। अतः अनुसन्धानकर्त्ता को पूरी तरह तटस्थ रहना चाहिए।

7. **सामान्य ज्ञान द्वारा उत्पन्न भ्रम (Misunderstanding caused by General Knowledge) :** सामाजिक अनुसन्धान में प्रायः हम अपने सामान्य ज्ञान के आधार पर किसी घटना या समस्या के संबंध में अपना निर्णय निश्चित करते हैं। जो सिद्धांत हमारे सामान्य ज्ञान की कसौटी पर खरे नहीं उतरते उन्हें हम गलत मान लेते हैं। इसके विपरीत, अनेक

गलत सिद्धांत जो हमारे सामान्य ज्ञान से मेल खाते हैं, उन्हें हम सही मान लेते हैं। इस प्रकार भ्रम के फलस्वरूप अनेक गलत सिद्धांतों को सही मान लिया जाता है और अनेक सही सिद्धांतों को गलत मान लिया जाता है।

**8. विषय–वस्तु का गुणात्मक रूप (Qualitative Nature of Subject Matter) :** वस्तुनिष्ठता प्राप्ति की कठिनाई वस्तु के गुणात्मक रूप के कारण उत्पन्न होती है। गुणात्मक रूप का तात्पर्य अमूर्त से है, जिसे देख नहीं सकते, केवल अनुभव कर सकते हैं। सामाजिक विश्वास, मान्यताएं व धारणाओं आदि का रूप गुणात्मक होता है। अतएव उनके अध्ययन में भौतिक विज्ञानों की भांति निश्चित मापदंडों को प्रयोग करना कठिन है।

**9. अनुसन्धानकर्त्ता का स्वार्थ (Self-interest of Researcher) :** पी. वी. यंग का मत है कि सामाजिक अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने की एक प्रमुख कठिनाई का कारण अनुसंधानकर्त्ता का निजी स्वार्थ भी है। कभी–कभी अनुसंधान के परिणाम में अनुसंधानकर्त्ता का निजी स्वार्थ निहित होता है। अतएव यह उन्हीं तथ्यों को खोजता है, जो उसके स्वार्थ का पूर्ति में सहायक सिद्ध हों। ऐसे अवसर पर वह स्वीकृत सिद्धांतों को अस्वीकार कर उस सिद्धांत को अपनाता है जोकि उसके विचारों के अनुकूल हो।

**10. सामाजिक दर्शन का प्रभाव (Effect of Social Philosophy) :** भौतक विज्ञानों में अनुसंधानकर्त्ता का संबंध जड़ और अचेतन वस्तुओं से है। लेकिन सामाजिक अनुसंधान में मानव समाज का अध्ययन किया जाता है। अतः समाज का वर्तमान दर्शन भी अनुसंधानकर्त्ता को प्रभावित करता है। इस कारण वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने में बाधा पैदा होती है। इसके अतिरिक्त अनुसंधानकर्त्ता स्वयं भी उसी समाज का एक सदस्य होता है जिसे वह अध्ययन के लिए खोलता है। उसके अंदर भी मानव स्वभाव की कमियों का होना स्वाभाविक है। उसके विचार, संस्कार, धारणायें इत्यादि समाज के पर्यावरण द्वारा पहले से निश्चित रहती हैं। वह अपने पूर्व विचार, संस्कार व धारणाओं के अनुकूल, अनुसंधान के परिणामों को टालने के प्रयत्न करता है जिससे अनुसंधानकर्त्ता की तटस्थता समाप्त हो जाती है और वह अपने अनुसधान में वस्तुनिष्ठता का निर्वाह नहीं कर पाता है।

**11. अनुसन्धान की शीघ्रता (Research Conducted Hurriedly) :** अनेक अवसरों पर अनुसंधान कार्य बड़ी शीघ्रता से संपन्न किया जाता है। इस शीघ्रता के कारण अनुसंधानकर्त्ता के अंदर प्रायः किसी भी निष्कर्ष को मान लेने की प्रवृत्ति होती है। इसी

कारण सही परिणाम प्राप्त करना कठिन होता है। इसके अतिरिक्त सामाजिक अनुसंधान की विषय–वस्तु इतनी जटिल होती है जिसके लिए दीर्घकालीन अध्ययन और धैर्य भी आवश्यक होता है। किंतु अनुसंधान कार्य की शीघ्रता के फलस्वरूप पूर्णतया सही निष्कर्ष प्राप्त नहीं होते हैं। केवल आंशिक रूप से सत्य परिणामों को ही पूर्णरूपेण सत्य मान लिया जाता है। अतः शीघ्र संपन्न किये गये अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता का निर्वाह नहीं होता है।

### 4.6.4 वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने के साधन (Means for Achieving Objectivity)

यह सच है कि सामाजिक घटनाओं का वस्तुनिष्ठ अध्ययन करने के मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ हैं। पर इसका तात्पर्य कदापि यह नहीं है कि सामाजिक घटनाओं के अनुसन्धान वस्तुनिष्ठता से रहित होते हैं और उनमें यथार्थ निष्कर्ष की सम्भावनाएँ बिलकुल ही नहीं होती हैं। वास्तविक परिस्थिति इससे कुछ विपरीत ही है। वस्तुनिष्ठता की प्राप्ति सामाजिक अनुसन्धान के क्षेत्र में कठिन हो सकती है, पर कभी भी असम्भव नहीं। अपने अनुभवों तथा अन्वेषणों के आधार पर समाजशास्त्रियों ने उन अनेक साधनों का पता लगा लिया है जिनके द्वारा सामाजिक घटनाओं के अध्ययन में भी वस्तुनिष्ठता प्राप्त की जा सकती है। कहा जाता है कि वस्तुनिष्ठ रहने की इच्छा और वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने में प्रयत्नशील रहना इस दिशा में महत्त्वपूर्ण है। तटस्थ रहने की इच्छा का सम्बन्ध स्वयं अनुसन्धानकर्त्ता से है और उसकी अभिव्यक्ति इस रूप में होती है कि अनुसन्धानकर्त्ता स्वयं वस्तुनिष्ठता की प्राप्ति के लिए सचेत रहता है और उसके लिए समस्त व्यक्तिगत राग–द्वेष, विचार, मूल्य, पक्षपात, मिथ्या–झुकाव आदि से हर पग पर बचता है। दूसरी और वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने का प्रयत्न इस बात का द्योतक है कि अनुसन्धानकर्त्ता ऐसी विधियों को अपनाता है, ऐसे तथ्यों को संकलित करने का प्रयत्न करता है कि उसका अध्ययन अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ हो सके। इन इच्छाओं तथा प्रयत्नों को ही उन साधनों के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है जो कि सामाजिक अनुसन्धान में वस्तुनिष्ठता की प्राप्ति के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। ये साधन निम्नलिखित हैं :

**1. प्रयोगसिद्ध विधियां (Empirical Methods) :** प्रत्यक्ष प्रयोगसिद्ध अध्ययन–पद्धतियां वे विधियां हैं जिनके द्वारा अनुसंधानकर्त्ता या अध्ययनकर्त्ता को स्वयं क्षेत्र में जाकर सूचना संकलित करनी पड़ती है। केवल पुस्तकों के आधार पर, मनघड़ंत अथवा सुनी–सुनाई बातों

पर विश्वास करके जो निष्कर्ष निकाले जाते हैं वे व्यक्ति प्रधान (Subjective) होते हैं, वैषयिक नहीं। बाह्य साधनों के द्वारा जो सूचना या सामग्री मिलती है, वह हमारे विचारों के विपरीत होते हुए भी सही है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति निरीक्षण परीक्षण करके बाह्य साधनों से वही सामग्री प्राप्त करेगा जिनके निष्कर्ष समान होंगे। व्यक्तिगत चिंतन–मनन कितना ही व्यवस्थित क्यों न हो, उसमें भ्रम तथा भ्रांतियों के समावेश की संभावना हो सकती है किंतु क्षेत्रीय साधनों से एकत्रित सूचना में व्यक्तिगत मान्यताओं का प्रभाव कम हो जाता है। ठोस, निश्चित और गणनात्मक विवरण वैषयिकता प्राप्त करने में पर्याप्त सहायक होता है। सामाजिक अनुसंधान में इन प्रत्यक्ष प्रयोगसिद्ध विधियों का प्रचलन बढ़ रहा है और इसमें अधिकाधिक वैषयिकता लाने का प्रयत्न किया जा रहा है। उदाहरण के लिए 'रहन–सहन का स्तर' (Standard of Living) एक सामान्य शब्द है जिसके माप का कोई विशेष साधन नहीं है, लेकिन प्रत्यक्ष प्रयोगसिद्ध पद्धतियों के आधार पर जीवनोपयोगी वस्तुओं और गुणों की निश्चित सूची बनाकर उनकी प्राप्ति तथा अभाव का प्रत्यक्ष अध्ययन करके किसी को भी व्यक्ति, परिवार, समूह या वर्ग का निश्चित 'रहन–सहन का स्तर' समझने का वर्णन करने में सुविधा हो गई है और इसमें अध्ययनकर्त्ता का निर्णय या मत कहीं अधिक बाधक नहीं बनता। मानवशास्त्री भी इन विधियों के प्रयोग से अपने अध्ययनों में वैषयिकता प्राप्त करने जा रहे हैं।

**2. परिभाषाओं और अवधारणाओं का प्रमापीकरण (Standardization of Terms and Concepts) :** समाज–विज्ञान में पारिभाषिक शब्द तथा अवधारणाओं का विशेष अर्थ लगाया जाता है और यह विशेष अर्थ भी विभिन्न विद्वानों ने भिन्न–भिन्न रूप में लगाया है। इस प्रकार स्वयं विद्वानों ने 'समाज' शब्द को मूर्त और अमूर्त रूपों में समझा और प्रयोग किया है। इस प्रकार सामाजिक विज्ञानों में कोई व्यक्ति किसी शब्द का मनमाना अर्थ लगा लेता है और जब एक ही तथ्य को प्रकट करने वाला निश्चित शब्द नहीं होता तो खोज के निष्कर्ष भी समान नहीं होते। इस दृष्टि से वैषयिकता होते हुए भी छिप जाती है। समाज विज्ञानों के अतिरिक्त प्राकृतिक विज्ञानों में प्रत्येक शब्द अपना विशिष्ट अर्थ रखता है जिसे प्रत्येक अनुसन्धानकर्त्ता उसी अर्थ में प्रयोग करता है। समाज–विज्ञानों में प्रयुक्त परिभाषाओं और अवधारणाओं का समान अर्थ न होने के कारण अनुसंधान या अध्ययन में एकरूपता नहीं रहती जो वैषयिकता का प्रधान आधार है। अतः अब प्रयत्न चल रहा है कि प्रत्येक

परिभाषा और शब्द निश्चित, प्रमाणित तथा प्रमाणित अर्थों में ही प्रयोग किया जाये ताकि सब लोग उसका समान अर्थ लगायें, तथा सामाजिक तथ्यों और इकाइयों को संख्यात्मक रूप में समझ सकें। ऐसा करने से अध्ययन में पर्याप्त वैषयिकता लाई जा सकती है।

**3. यांत्रिक साधनों का उपयोग (Use of Mechanical Devices) :** अनुसंधान में जितना ही अधिक कार्य यंत्रों के आधार पर होगा, उतनी ही अधिक वैषयिकता उपलब्ध हो सकेगी। यद्यपि सामाजिक तथ्यों के अध्ययन की प्रत्येक प्रक्रिया में यंत्रों का उपयोग संभव नहीं हो पाता है, फिर भी मनोविज्ञान में इस प्रकार के यंत्रों का सफल प्रयोग हो रहा है। समाजशास्त्र में भी तथ्यों के संकलन में 'टेपरिकार्डर', फिल्म, मानचित्र, समाजमिति पैमाने, फोटो आदि के द्वारा वैषयिक सामग्री संकलित की जा रही है। विश्लेषण व विवेचन में गणना करने, सारणीयन (Tabulation) करने आदि की मशीनों का उपयोग सफलतापूर्वक होता जा रहा है। कुछ भी हो इन साधनों के अधिक प्रयोग द्वारा वैषयिकता लाने पर हर संभव प्रयत्न किया जा रहा है।

**4. प्रयोगात्मक विधियां (Experimental Method) :** अध्ययन में पूर्ण वैषयिकता प्राप्त करने के लिए नियंत्रित परीक्षण (Controlled Experiment) अत्यंत उपयोगी व महत्त्वपूर्ण उपाय है। समाज–विज्ञानों में यद्यपि विषय–वस्तु को नियंत्रित करके उसका परीक्षण करना सरल नहीं है किंतु इस दिशा में सतत प्रयत्न किये जा रहे हैं। प्रयोगात्मक विधि में दो प्रकार के समूहों को चुन लिया जाता है। दोनों समूह सभी दृष्टियों से समान होते हैं। एक समूह को नियंत्रित कर दिया जाता है अर्थात् उसमें कोई परिवर्तन नहीं होने दिया जाता, दूसरे समूह को परीक्षण के लिए स्वतंत्र कर दिया जाता है। यह स्वतंत्रता केवल विशेष कारक का प्रभाव मालूम करने के लिए की जाती है, अर्थात् परीक्षात्मक समूह में कोई कारक उत्पन्न करके उसका प्रभाव देखा जाता है। जैसे एलटन मेयो नें इस विधि का प्रयोग हार्थोन प्रयोग में किया था। इस प्रकार प्रयोगात्मक प्रणाली अभिमति व पक्षपात को कम कर देती है किंतु सामाजिक अनुसंधान में अभी इसका प्रयोग अधिक विकसित नहीं हुआ है। आशा है कि भविष्य में इस दिशा में महत्त्वूर्ण उपलब्धियां प्राप्त होंगी।

**5. सामूहिक अनुसन्धान का उपयोग (Use of Group Research) :** सामूहिक अनुसंधान का तात्पर्य यह है कि किसी भी सामाजिक समस्या की खोज केवल एक व्यक्ति के द्वारा न होकर अधिक व्यक्तियों द्वारा की जानी चाहिए। एक ही प्रकार की पद्धति तथा प्रणालियों के

द्वारा एक ही समस्या का अध्ययन जब कई अनुसंधानकर्त्ता करते हैं या फिर एक ही अनुसंधानकर्त्ता भिन्न–भिन्न प्रणालियों द्वारा एक ही समस्या का अध्ययन कर रहा होता है तो पक्षपात की संभावना बहुत कम हो जाती है। सामूहिक अनुसंधान या समूह अनुसंधान से प्राप्त प्रत्येक अध्ययनकर्त्ता के निष्कर्षों की तुलना की जाती है। तुलना करने पर यदि अंतर आता है तो इस अंतर के कारणों का पता लगाया जाता है। इसके अतिरिक्त, यदि एक ही अनुसंधानकर्त्ता विभिन्न पद्धतियों द्वारा प्राप्त निष्कर्षों में अंतर पाता है तो वह भी अंतर का कारण ज्ञात कर सकता है। सामूहिक अनुसंधान पद्धति वास्तव में कई व्यक्तियों द्वारा एक ही समस्या के अध्ययन के लिए अधिक उपयोग में लायी जाती है। विभिन्न अनुसंधानकर्त्ताओं के निष्कर्षों में अंतर दूर करने के लिए पुनः अधिक वैषयिक अध्ययन किया जाता है और इस प्रक्रिया में पूर्ण वैषयिकता प्राप्त की जा सकती है। इतना ही नहीं, अब प्रत्येक अनुसंधानकर्त्ता को यह ध्यान होता है कि अन्य लोग भी उसी समस्या का उसी पद्धति से अध्ययन कर रहे हैं तो स्वाभाविक रूप से वह प्रारंभ से ही सावधानीपूर्वक तटस्थ दृष्टि से निरीक्षण–परीक्षण विवेचन व विश्लेषण करता है, ताकि तुलनात्मक अन्वेषण में उसके निष्कर्ष ठीक उतरें। इस विधि में भी एक प्रकार से 'सांख्यिकीय नियमितता का नियम' (Law of Statistical Regularity) काम कर रहा होता है। सच तो यह है कि यह पद्धति वैषयिकता प्राप्त करने की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसमें अध्ययनकर्त्ता के दोष स्पष्ट हो जाते हैं और प्रत्येक दोष का निवारण भी हो जाता है। एक ही परीक्षण को जितनी बार दोहराया जाता है उतनी ही उसमें शुद्धता आती है। इस प्रकार सामूहिक अनुसंधान इस युग की मांग है और सामाजिक तथ्यों की जटिल प्रकृति का वैषयिक अध्ययन करने में अत्यधिक सहायक है। समाज–विज्ञानों में इसका प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

**6. दैव निदर्शन पद्धति का उपयोग (Use of Random Sampling Method) :** वैषयिकता प्राप्ति में एक कठिनाई, "निदर्शन" चुनने के कारण भी होती है। वर्ग या समूह में से अध्ययन के लिए प्रतिनिधि इकाइयों के चुनाव के समय अध्ययनकर्त्ता की अभिमति, पक्षपात अथवा बाहरी कारकों का प्रभाव काम कर जाता है और सही प्रतिनिधित्व करने वाली इकाइयों या व्यक्तियों के स्थान पर ऐसी इकाइयों या व्यक्तियों को अध्ययन के लिये चुन लिया जाता है जो वास्तव में समूह का प्रतिनिधित्व नहीं करती, फलस्वरूप निष्कर्ष सत्यापन व परीक्षण के योग्य नहीं होते। इस समस्या या कठिनाई को दूर करने के लिए सैंपल

चुनने के लिए 'दैव निदर्शन पद्धति' का प्रयोग किया जाता है। इस पद्धति के द्वारा प्रत्येक इकाई को प्रतिनिधि के रूप में चुने जाने की संभावना होती है और अनुसन्धानकर्त्ता या अध्ययनकर्त्ता की इच्छा उसके चुनाव को प्रभावित नहीं कर पाती है। दैव निदर्शन सांख्यिकीय नियमितता के नियम (Law of Statistical Regularity) पर आधारित है जिसके द्वारा कभी भी अनायास चुनाव करने पर हर प्रकार की इकाइयों को चुने जाने की समान संभावना रहती है। अतः दैव निदर्शन के उपयोग से वैषयिकता लाने में पर्याप्त सहायता मिलती जा रही है।

**7. प्रश्नावली और अनुसूची का उपयोग (Use of Questionnaire and Schedule) :** सामाजिक घटना का अध्ययन केवल व्यक्तिगत अवलोकन अथवा सामान्य वार्तालाप तक सीमित रखकर कोई भी अनुसंधानकर्त्ता समान निष्कर्ष प्राप्त नहीं कर सकता है। इस समस्या या कठिनाई को दूर करने में प्रश्नावलियां तथा अनुसूचियां विशेष तौर पर सहायक सिद्ध हुई हैं। अनुसूचियों में प्रमाणित व निश्चित प्रश्न होते हैं, जिनका निश्चित अर्थ होता है। अतः न तो प्रश्नों का अर्थ सूचनादाताओं द्वारा पृथक–पृथक लगाया जा सकता है और न ही अध्ययनकर्त्ता अपनी इच्छा से कोई कम या अधिक प्रश्न पूछ सकता है। निश्चित प्रश्न के निश्चित उत्तर होने से वैषयिकता के मार्ग में सफलता प्राप्त हो जाती है। किंतु सबसे बड़ी कठिनाई प्रश्नावली या अनुसूची के प्रमाणीकरण की है। प्रत्येक अध्ययनकर्त्ता अनुसूची व प्रश्नावली में प्रश्नों के निर्माण के समय उनके स्वरूप और भाषा में अंतरंग भावना का समावेश कर सकता है इसलिए यदि भिन्न–भिन्न प्रकार की अनुसूचियों व प्रश्नावलियों का प्रमापीकरण कर दिया जाये तो वह समस्या हल हो सकती है। लेकिन कठिनता यह है कि सामाजिक समस्याएं, घटनाएं तथा अध्ययन के उद्देश्य एक समान नहीं होते, अतः एक प्रमाणित प्रश्नावली या अनुसूची तैयार करना बड़ा कठिन कार्य है। इसका उपाय यह हो सकता है कि – प्रमुख समस्याओं को खंडों में विभाजित करके प्रत्येक खंड की पृथक् विशेषताएँ या अनुसूची तैयार कर दी जायें और जिस खंड से अध्ययन संबंधित हो, उसकी प्रमाणित प्रतिलिपि प्रयोग में लाई जाये। इस प्रमाणित प्रश्नावली या अनुसूची के साथ अध्ययन क्षेत्र की स्थानीय विशेषताओं से संबंधित प्रश्न अध्ययनकर्त्ता स्वयं जोड़ सकता है। इस प्रकार सामाजिक अनुसंधान में काफी सीमा तक एक वैषयिकता लायी जा सकती है।

**8. अंतर–अनुशासन अथवा सहकारी अनुसंधान (Inter Disciplinary or Co-operative Approach) :** समाज एक जटिल पूर्णता है जिसमें प्रत्येक घटना को मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा अन्य कारक सम्मिलित रूप से प्रभावित करते हैं इसलिए केवल एक ही सामाजिक विज्ञान में निपुण व्यक्ति प्रत्येक दृष्टिकोण से सामाजिक समस्या का सर्वांगीण अध्ययन नहीं कर सकता है। अतः ऐसी स्थिति में भिन्न–भिन्न सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा एक ही समस्या का अपने–अपने विशिष्ट दृष्टिकोणों से अध्ययन किया जाना चाहिए। इस प्रकार उस समस्या का यथार्थ, वास्तविक व बहुमुखी चित्र पूरे तौर पर सामने आ सकता है। इस सहकारी ढंग से किये गये अध्ययन को ही 'अंतर अनुशासन' अथवा 'सहकारी अनुसंधान' के नाम से जाना जाता है। मूल बात यह है कि सहकारी अनुसंधान में समाजशास्त्री, मानवशास्त्री, अर्थशास्त्री, राजनीतिशास्त्री, भूगोलशास्त्री, भूगर्भशास्त्री, इंजीनियर, प्रशासन आदि सभी विज्ञानों के विशेषज्ञों की सहायता ली जाती है। लीप्ले (Leplay) ने जो एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी अर्थशास्त्री थे इस पद्धति के द्वारा पारिवारिक स्तर का सफल अध्ययन किया, इस अध्ययन का उद्देश्य कारीगरों पर औद्योगीकरण का प्रभाव ज्ञात करना था। उन्होंने अपने अन्वेषण में अर्थशास्त्रियों, राजनीति–विशेषज्ञों आदि के अतिरिक्त इंजीनियरों से भी सहायता प्राप्त की इस पद्धति की मूल विशेषता यह है कि विषय का अध्ययन सभी दृष्टिकोणों से किया जाता है। विभिन्न शाखाओं के निष्कर्षों के दोष तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा आसानी से स्पष्ट हो जाते हैं और उनके निवारण का पर्याप्त व उचित अवसर भी मिल जाता है।

अंतर–अनुशासन पद्धति के विषय के क्षेत्र में यंग (P.V. Young) लिखते हैं, "सहकारी अनुसंधान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह वर्तमान जीवन में जटिलतापूर्वक गुंथे हुये सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं आर्थिक व्यक्तियों के जाल के अध्ययन एवं विश्लेषण को सरल बना देता है।

आज किसी भी घटना के एक कारक पर बल देने की गलती समाज वैज्ञानिक नहीं करते हैं। आज अपराध के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक आदि सभी कारकों की विवेचना की जाती हैं। ऐसा करने से ही हमारे अध्ययन में यथार्थता या वस्तुनिष्ठता पनप पाती है। ऐसा करना हमारे लिए तभी सम्भव होता है जबकि उस विषय पर विभिन्न विज्ञानों द्वारा निकाले गए निष्कर्षों का प्रभावपूर्ण उपयोग करने में हम सफल होते हैं। इस प्रकार विभिन्न विज्ञानों के सहयोग पर आधारित अध्ययन या दृष्टिकोण को ही

अन्तः वैज्ञानिक या सहयोगी अध्ययन कहते हैं। आज यह स्वीकार किया जाने लगा है कि अनुसन्धानकर्त्ता कार्य के दौरान विभिन्न विज्ञानों के बीच जितना सहयोग होगा अध्ययन के निष्कर्ष उतने ही अधिक वस्तुनिष्ठ होंगे।

**4.6.5 अपनी प्रगति जांचिए :**

(थ) वस्तुनिष्ठता का अर्थ परिभाषित कीजिए।

(द) सामाजिक अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता की क्यों आवश्यकता है ?

(ध) सामाजिक अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने के साधनों का वर्णन करो।

(न) अनुसंधान में प्रयोगात्मक विधियों से आपका क्या अभिप्राय है?

(प) वस्तुनिष्ठता को प्राप्त करने में आने वाली प्रमुख कठिनाईयों का वर्णन करो।

**4.6.6 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर :**

(थ) अनुसंधानकर्त्ता द्वारा तटस्थ और पक्षपात रहित निरीक्षण द्वारा तथ्यों का उनके वास्तविक रूप में संकलन और विश्लेषण ही वस्तुनिष्ठता है।

(द) उचित रूप से प्रतिनिधित्वकारी तथ्यों की प्राप्ति व सत्यापन के लिए सामाजिक अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता की आवश्यकता होती है, जिससे सामाजिक अनुसंधान को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया जा सके और नए अनुसंधान की संभावनाओं को विकसित किया जा सके।

(ध) वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने के साधन :

–प्रयोगसिद्ध विधियाँ

–यांत्रिक साधनों का प्रयोग

–सामूहिक अनुसंधान का उपयोग

–अंतर–अनुशासनात्मक अनुसंधान

(न) प्रयोगात्मक विधि : इस विधि में दो समूहों को चुना जाता है जो सभी दृष्टियों में समान होते हैं। एक समूह को निर्धारित कर दिया जाता है, अर्थात उसमें कोई भी परिवर्तन नहीं होने दिया जाता बल्कि दूसरे समूह को परीक्षण के लिए स्वतंत्र कर दिया जाता है। इसके विशेष कारण प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।

(प) वस्तुनिष्ठता में आने वाली कठिनाईयाँ :

–भावात्मक प्रभाव

–एकरूपता का अभाव

–मौलिक तथ्यों का प्रभाव

–सामान्य ज्ञान द्वारा उत्पन्न भ्रम

–निष्पक्ष निष्कर्ष की प्राप्ति

## 4.7 सारांश :

प्रस्तुत विषय के अध्ययन के पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है कि द्वितीयक आँकड़े प्राथमिक शोध की प्रारूप रचना में सहायक होने के साथ–साथ प्राथमिक आँकड़ों के संग्रह से प्राप्त परिणामों की तुलना में भी सहायक होते हैं। अतः किसी भी शोध कार्य की शुरूआत करने से पहले द्वितीयक आँकड़ों का विश्लेषण करना हितकर होता है। द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण के लिए विशेष रूप से जिन तथ्यों व सूचनाओं की आवश्यकता होती है वे शोध विषय पर ही आधारित होते हैं। द्वितीयक आँकड़ों के पुनरावलोकन व विश्लेषण में वही सूचनाएं सांख्यिकीय तथा दूसरे प्रासंगिक आँकड़े सम्मिलित होते हैं जो विभिन्न स्तरों पर पारिस्थितिकीय विश्लेषण में भी सहायक होते हैं। आँकड़ों का विश्लेषण न केवल यह समझने में सहायक है कि किसी विशेष क्षेत्र में क्या हो रहा है बल्कि यह भी कि ये क्यों हो रहा है? अन्तर्वस्तु विश्लेषण के अध्ययन विषय सामान्यतः गुणात्मक होते हैं और हम अपनी प्रविधि की ही सहायता से इसके परिमाणात्मक परिणामों को निकालते हैं। इस प्रकार गुणात्मक तथ्यों का परिमाणात्मक विश्लेषण ही इस प्रविधि का अभीष्ट होता है। व्यावसायिक या राजनीतिक जनमत को जानने के प्रयास में भी इस प्रविधि की सहायता मिलती है। इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि अन्तर्वस्तु विश्लेषण के माध्यम से अनेक महत्वपूर्ण अनुसंधान सम्पन्न किए गए हैं। शोध कार्य का अंतिम चरण प्रतिवेदन लेखन होता है। प्रतिवेदन के द्वारा सामाजिक वैज्ञानिक अपने सारे प्रयत्न और उसके निष्कर्षों को दूसरों को बताता है। पहले किया हुआ शोध आगे वाले शोध के लिए नींव का काम करता है। वैज्ञानिक शोध में विभिन्न शोध कार्यों के बीच यह तारतम्य बहुत महत्वपूर्ण है। प्रतिवेदनों के द्वारा यह तारतम्य बनता है। संसार के किसी भी भाग में कोई भी शोध हो, उसके प्रतिवेदन के प्रकाशन के बाद वह संसार के वैज्ञानिक कोष का अंग बन जाता है। सामाजिक विज्ञान की घटनाओं की जटिलता व वैयक्तिक अभिनति दोनों का सामाजिक विज्ञान के अनुसंधान में समावेश के साथ–साथ इसमें वस्तुनिष्ठता का अभाव कर देता है। लेकिन इसके बावजूद भी सामाजिक विज्ञान अनुसंधान के अध्ययन विषय में यदि समुचित

पद्धतियों एवं साधनों का समन्वित उपयोग किया जाए तो ऐसे अध्ययनों में पर्याप्त वस्तुनिष्ठता प्राप्त करना संभव है।

## 4.8 मुख्य शब्दावली :

- **द्वितीयक आँकड़े** : द्वितीयक तथ्य सामग्री वह है जिसे मौलिक स्रोतों से एक बार एकत्र किया गया है तथा जिसका प्रकाशन अधिकारी उनसे अलग है जिसने प्रथम स्तर पर सामग्री इकट्ठी करने को नियंत्रित किया था।
- **विश्लेषण** : किसी विधान या व्यवस्थाक्रम की सूक्ष्मता से परीक्षण करने की तथा उसके मूल तत्त्वों को खोजने की क्रिया को विश्लेषण कहा जाता है।
- **अन्तर्वस्तु विश्लेषण–** अन्तर्वस्तु विश्लेषण दरों को मापने के लिए संचारों के व्यवस्थित, वस्तुनिष्ठ और मात्रात्मक ढ़ंग से अध्ययन और विश्लेषण करने की पद्धति है।
- **प्रतिवेदन लेख** : वह लिखित सामग्री, जो किसी घटना, कार्य–योजना, समारोह आदि के बारे में प्रत्यक्ष देखकर या छानबीन करके तैयार की गई रिपोर्ट होती है।
- **वस्तुनिष्ठता** : वस्तुनिष्ठता प्रमाण की निष्पक्षता से परीक्षण करने की इच्छा एवं योग्यता है।

## 4.9 अभ्यास हेतु प्रश्न :

### (क) निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए :

(1) द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण से आपका क्या अभिप्राय है ?

(2) द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण की सीमाओं का वर्णन करो।

(3) अंतर्वस्तु विश्लेषण का अर्थ समझाते हुए इसकी विशेषताएँ बताओ।

(4) अंतर्वस्तु विश्लेषण के कारणों का वर्णन करो।

(5) अनुसंधान प्रतिवेदन का अर्थ बताते हुए उसकी विशेषताओं का वर्णन करो।

(6) अनुसंधान प्रतिवेदन की प्रमुख कसौटियों का वर्णन करो।

(7) अनुसंधान प्रतिवेदन के प्रकाशन का वर्णन करो।

(8) वस्तुनिष्ठता का अर्थ परिभाषित करते हुए उसका अनुसंधान में महत्व का वर्णन करो।

(9) वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने के प्रमुख साधनों का वर्णन करो।

(10) अंतर अनुशासनात्मक अध्ययन का अर्थ बताओ।

(ख) **निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तारपूर्वक उत्तर दीजिए :**

(1) द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण की प्रक्रिया का विस्तारपूर्वक वर्णन करते हुए इसके गुण व दोषों का वर्णन करो।

(2) अंतर्वस्तु विश्लेषण की श्रेणियों का विस्तार से वर्णन करो।

(3) अंतर्वस्तु विश्लेषण का अर्थ समझाते हुए इसके चरणों का वर्णन करो।

(4) प्रतिवेदन लेखन का अर्थ परिभाषित करते हुए अनुसंधान में इसके उद्देश्यों का वर्णन करो।

(5) प्रतिवेदन लेखन की रूपरेखा का विस्तारपूर्वक वर्णन करो।

(6) अनुसंधान प्रतिवेदन की प्रमुख कसौटियों व प्रकाशन का वर्णन करो।

(7) वस्तुनिष्ठता का अर्थ परिभाषित करते हुए अनुसंधान में इसके महत्व का वर्णन करो।

(8) सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता की समस्याओं का विस्तारपूर्वक वर्णन करो।

## 4.10 आप ये भी पढ़ सकते हैं :


- अर्ल बैबी, ''द प्रक्टिस ऑफ सोशल रिसर्च'', (थ्रटियथ एडिशन), वैड्सवर्थ पब्लिशिंग कम्पनी, न्यूयार्क, 2012
- डी.के. भट्टाचार्य, ''रिसर्च मैथ्डोलॉजी'', एक्सल बुक्स, न्यू दिल्ली, 2005
- सी.आर. कोठारी, ''रिसर्च मैथ्डोलॉजी : मैथड्स एण्ड टैक्निक्स'', (सैकिण्ड रिवाइज्ड एडिसन), न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स (पी. लिमिटेड), न्यू दिल्ली, 2004
- राबर्ट बी.बर्नस, ''इंट्रोडूक्सन टू रिसर्च मैथड्स'', (फोर्थ एडिसन), सेज पब्लिकेशन्स, लंदन, 2000
- एस. सरनताकोस, ''सोशल रिसर्च'', (सैकिण्ड एडिसन), मैकमिलन प्रेस, लंदन, 1998
- एच.एल. मैनहिम, ''सोशलोजिकल रिसर्च'', दा डोरसे प्रेस, इलिनोइस, 1977
- रसेल एल. एकॉफ, ''डिजाइन ऑफ सोशल रिसर्च'',यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, शिकागो, 1960
- राम आहूजा, ''सामाजिक अनुसंधान'', रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2010


***